न्यायियों

1 यहोशू का देहान्त होने के बाद
इस्राएलियों ने प्रभु से सवाल किया,
“कनानियों के खिलाफ़ लड़ने के लिए हमारी
ओर से पहले हमला कौन बोलेगा ? 2 प्रभु का
जवाब था, “यहूदा, हाँ मैंने तुम्हें जीत दे दी
है।” 3 यहूदा ने शिमोन से कहा, “कनानियों
से लड़ने में मेरा साथ दो, मैं भी तुम्हारा
साथ दूँगा।” इसलिए शिमोन उसके साथ
हो लिया । 4 यहूदा ने हमला बोल दिया
और प्रभु ने कनानियों और परिज्जियों को
उसके हाथ में कर दिया और बेज़ेक में उन
लोगों ने दस हज़ार आदमियों को हताहत
किया । 5 बेज़ेक में अदोनीबेज़ेक से लड़े
और कनानियों तथा परिज्जियों दोनों ही
को मारा । 6 हालांकि अदोनीबेज़ेक जान
बचा-कर भागा था, लेकिन उसे उन्होंने
पकड़ा और उसके हाथ-पाँव के अँगूठे काट
दिए। 7 अदोनीबेज़ेक ने कहा, “हाथ-पाँव के
अँगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेंज़ के नीचे
टुकड़े बिनते थे। मैंने जैसा किया था, वैसा
ही भोग रहा हूँ। फिर उसे यरूशलेम ले जाया
गया, जहाँ वह मर गया । 8 यहूदी लोगों ने
लड़ाई लड़ी और यरूशलेम पर जीत हासिल
कर ली। वहाँ रहने वालों को उन्होंने जान
से मारने के बाद नगर में आग लगा दी ।
9 फिर वे पहाड़ी, दक्षिण और नीचे के हिस्से
में रहने वाले कनानियों से युद्ध करने आए।
10 यहूदा ने हेब्रोन में रहने वाले कनानियों
पर हमला किया और शेशै, अहीमन तथा
तल्मै की जान ले ली। 11 फिर दबीर पर
चढ़ाई की 12 तब कालेब बोला, “जो व्यक्ति
किर्यत्सेपेर को मार कर ले ले, उसे मैं अपनी
बेटी अकसा ब्याह दूँगा। 13 कालेब का छोटा
भाई ऐसा कर सका, इसलिए अकसा से उस
का ब्याह हो गया। 14 उसके पति ओत्नीएल
ने अकसा को कहा कि वह अपने पिता
से जायदाद मांगे 15 अकसा ने पिता से माँग
की, कि वह उसे दक्षिणी हिस्से के साथ ही
पानी के सोते भी दे। कालेब ने उसे ऊपर
और नीचे भाग के सोते दे दिए। 16 मूसा के
साले, एक के साथ खजूर वाले नगर से यहूदा
के जंगल में गए और वही इस्राएलियों के
साथ रहने लगे 17 इसके बाद यहूदा अपने
भाई शिमोन के साथ सपत गया, जहाँ के
कनानियों को उन्होंने मारा और नगर को
बर्बाद कर डाला इसीलिए उस नगर का नाम
होर्मा रखा गया। 18 यहूदा ने आस-पास की
ज़मीन सहित अज्जा, अश्कलोन, और एक्रोन
पर कब्ज़ा कर लिया। 19 प्रभु के सहयोग से
उसने पहाड़ी देश के लोगों को बाहर कर
दिया। तराई के इलाके के लोगों के पास लोहे
के रथ होने के कारण उन्हें हराया न जा सका।
20 मूसा के आदेश के मुताबिक कालेब को
हेब्रोन सुपुर्द कर दिया। वहाँ उसने अनाक
के तीन बेटों को भगा दिया। 21 बिन्यामीनियों
ने यरूशलेम में रहने वाले यबूसियों को न
निकाला। इसलिए वे वहाँ पर बिन्यामीनियों
के साथ ही बसे रहे। 22 यूसुफ़ के लोगों ने
बेतेल पर हमला कर दिया। प्रभु की मदद
उन्हें मिली हुयी थी 23 यूसुफ़ के घराने ने
बेतेल की जासूसी करने के लिए लोग भेजे।
24 और पहरेदारों ने एक आदमी को उस नगर
के बाहर आते देख उस से पूछा, “नगर के
भीतर जाने का रास्ता हमें बता दो। हमारी
दया तुम पर बनी रहेगी।” 25 उस से जानकारी
पाने के बाद वे नगर में गए और वहाँ के

लोगों को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन
जिस आदमी ने उनकी मदद की थी, उसे
परिवार सहित छोड़ दिया। 26 हित्तियों के देश
में जाकर उस आदमी ने लूज़ नामक देश बसा
दिया। 27 मनश्शे ने अपने-अपने गाँवों सहित
बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम और मगिद्दो
में रहने वालों को नहीं निकाला। इसलिए
उस देश में कनानी बने रहे। 28 इस्राएलियों
के शक्तिशाली हो जाने पर वे कनानियों
से बेगारी करवाने लगे। उनको उन्होंने पूरी
तरह से निकाला नहीं। 29 गेज़ेर में रहने
वाले कनानियों को एप्रैम ने बाहर न किया।
इसलिए वे वहीं बसे रहे। 30 जबूलून ने
कित्रोन और नहलोल के निवासियों को न
निकाला, इसलिए कनानी वहीं पनपते रहे।
वे इन्हीं के कब्ज़े में भी हो गए। 31 आशेर ने
अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेवला,
अपीक और रहोब के लोगों को नहीं
निकाला। 32 इसलिए आशेरी, कनानियों के
बीच रहने लगे। 33 नप्ताली ने बेतशेमेश और
बेतनोत में रहने वालों को बाहर नहीं किया
और वे भी कनानियों के साथ बस गए।
वहाँ के लोगों ने उनके अधिकार को मान
लिया। 34 एमोरियों ने दानियों को पहाड़ी
इलाके में खदेड़ दिया। 35 इसलिए एमोरी
हेरेस नामक पहाड़, अय्योन और शाल्बीम में
बसे रहे। यूसुफ़ का खानदान इतना ताकतवर
हो गया कि वे उनकी अधीनता में आ गए।
36 एमोरियों के देश की सीमा अक्रब्बीम
नामक पहाड़ की चढ़ाई से शुरू करके ऊपर
की तरफ़ थी।

2 प्रभु का दूत गिलगाल से बोकीम गया
और कहने लगा, “मिस्र की गुलामी से
मैंने तुम्हें आज़ाद किया और वायदा किए
हुए देश में पहुँचा दिया। मेरा वायदा यही था
कि मैं अपनी कही बात को बदलूँगा नहीं ।
2 इसलिए तुम लोग यहाँ के लोगों को कोई
वचन देकर बन्ध नहीं जाना। और उनकी
वेदियों को तोड़ डालना। लेकिन तुमने इसके
विपरीत ही किया। 3 इसलिए “उन्हें मैं तुम्हारे
देखते निकालूँगा नहीं और वे तुम्हारे सीने
में काँटे और उनके देवता एक जाल बन
जाएँगे।” 4 प्रभु के दूत की इन बातों को सुन
कर लोग ऊँची आवाज़ में रोने लगे। 5 उस
जगह का नाम उन्होंने बोकीम रख दिया। उन
लोगों ने वहीं कुर्बानी भी चढ़ायी। 6 इसके
बाद यहोशू को वापस भेज दिया। इस्राएली
अपनी अपनी ज़मीन को ले लेने के लिए
चले गए। 7 यहोशू के जीवन काल और मौत
के बाद और दूसरे बुज़ुर्गों के जीवन काल
में जो यहोशू के मरने के बाद ज़िन्दा रहे
थे, प्रभु के बड़े कामों को देखा था। इन
समयों में इस्राएली लोग प्रभु के भय ही में
चलते रहे। 8 एक सौ दस साल की उम्र में
यहोशू चल बसा 9 उसकी लाश को गाश
नाम पहाड़ के उत्तर में दफ़ना दिया गया।
10 उसी पीढ़ी के लोग भी धीरे-धीरे चल
बसे। उसके बाद की पीढ़ी के लोग न प्रभु
का ज्ञान रखते थे, न उनके किए गए कामों
को 11 और ये इस्राएली प्रभु की इच्छा के
खिलाफ़ ज़िन्दगी जीने लगे। 12 वे आस-पास
के देशों के देवी-देवताओं को मानने लग गए।
इसलिए प्रभु को बहुत गुस्सा आया। 13 प्रभु
की इबादत करना छोड़कर वे बाल देवता
और अश्तोरेत देवी की इबादत करने लगे।
14 इसलिए प्रभु का गुस्सा भड़क गया। और
प्रभु ने उन लोगों को लुटेरों के साथ सुपुर्द
कर दिया। उनको आस पास के दुश्मनों के
दबाव में कर दिया। इसलिए वे फिर हारने
लगे। 15 वे लोग जहाँ जहाँ जा रहे थे, प्रभु
उनका नुकसान ही होने दे रहे थे इसलिए वे

बड़ी परेशानी में फँस गए। 16 फिर भी प्रभु उन
लोगों के लिए जज का इन्तज़ाम करते थे,
ताकि वे लुटने से बच जाएँ। 17 ये लोग अपने
जजों[a] की भी नहीं सुनते थे। व्यभिचारिन की
तरह वे लोग पराए देवताओं की स्तुति करते
थे। अपने पूर्वजों की जीवन शैली को उन्होंने
त्याग दिया। 18 जब जब प्रभु इन लोगों के
लिए जज[b] को ठहराते थे, तब-तब उसके
ज़िन्दा रहने तक दुश्मनों से आज़ाद करते थे।
प्रभु उनके कराहने को जो शोषण और दंगों
की वजह से हुआ करता था, तरस से मर
जाया करते थे। 19 जज का देहान्त हो जाने
के बाद वे फिर देवी-देवताओं की महिमा
करने लगते थे। 20 इसीलिए प्रभु का क्रोध
भड़क उठा और उन्होंने कहा, "इनके पूर्वजों
से बान्धी वाचा इन लोगों ने तोड़ ली है। ये
लोग मेरी बात मानते ही नहीं हैं। इसलिए
मरते तक यहोशू जिन जातियों को छोड़ गया
था, उन्हें मैं बिल्कुल नहीं निकालूँगा। 21 इस
तरह से मैं उनको परखूँगा, कि अपने पूर्वजों
की तरह वे मेरे रास्ते पर चलेंगे या नहीं।
इसलिए प्रभु ने उन लोगों को एक दम से
खदेड़ा नहीं। 22 ताकि उनके ज़रिए मैं उन्हें
जाँच सकूँ कि प्रभु की बात वे मानेंगे या नहीं,
जिस तरह उनके पहले बुज़ुर्ग लोग[c] करते
थे। 23 इसलिए प्रभु ने उन लोगों को एकदम
से नहीं निकाला, लेकिन रहने दिया, और
उन्होंने उन लोगों को यहोशू के हाथ में भी
न सुपुर्द किया था।

3 इस्राएली लोगों में से जितने लोगों ने युद्ध
में हिस्सा नहीं लिया था, उन्हें परखने
के लिए प्रभु ने तमाम जातियों को वैसे ही
रहने दिया था, 2 ताकि भविष्य में जिन्हें
युद्ध कौशल न हो, वे सीख लें। 3 कहने
का अर्थ यह है कि पाँचों सेनापतियों सहित
पलिश्तियों, सभी कनानियों, सिदोनियों और
बाल -हेर्मोन पहाड़ से लेकर हमात की तराई
तक लबानोन पहाड़ में रहने वाले हिव्वियों
को। 4 इन्हें इसलिए बाहर निकाला नहीं गया
ताकि इस्राएली आज्ञा मानने के सम्बन्ध
परखे जाएँ। 5 इसलिए इस्राएली कनानियों,
हित्तियों, परिज्जियों, हिव्वियों के मध्य ही
में रहे। 6 इसके साथ ही वे आपस में ब्याह
शादी करने लगे और उनके देवी-देवताओं
को पूजने लगे। 7 इस तरह इस्राएलियों ने
प्रभु के कहने के खिलाफ़ किया और प्रभु
को भूल गए। वे तमाम देवी-देवताओं का
भजन कीर्तन करने में लग गए। 8 इसलिए
प्रभु परमेश्वर को गुस्सा आया और उन
लोगों को अरम्नहरैम के राजा कूशत्रिशातैम
के अधीन कर दिया। आठ साल तक वे
उसके अधीनता में रहे। 9 फिर इस्राएली
गिड़गिड़ाए। प्रभु ने उन्हें कालेब के छोटे भाई
ओत्नीएल के द्वारा आज़ाद किया। 10 प्रभु
के आत्मा की ताकत से वह न्यायी बना
और जब युद्ध में लड़ने गया तो प्रभु ने
मेसोपोटामिया के राजा कूशन-रिशातैम को
उसके अधीन कर दिया। ओत्नीएल ने उस
पर जीत हासिल कर ली। 11 अगले चालीस
साल तक शान्ति बनी रही। उन्हीं समयों में
ओत्नीएल चल बसा 12 इस्राएलियों ने फिर
प्रभु के विरोध में जीवन बिताना आरम्भ
किया प्रभु ने मोआब के राजा एग्लोन को
उन लोगों के ऊपर कर दिया। 13 अम्मोनियों
और अमालेकियों के साथ मिल कर उसने
इस्राएलियों को हराया और खजूर वाले नगर
पर कब्ज़ा जमा लिया। 14 अट्ठारह साल
तक इस्राएली मोआब के राजा एग्लोन के
अधिकार में रहे। 15 फिर इस्राएली प्रभु के

[a] **2.17** न्यायियों [b] **2.18** न्यायी [c] **2.22** पूर्वज

सामने गिड़गिड़ाए। प्रभु ने उनकी सुन कर
गेरा के बेटे एहूद से जो बाएँहत्था था,उन्हें
आज़ाद करने के लिए खड़ा किया। उसी
के हाथ से इस्राएलियों ने मोआब के राजा
के पास ईनाम भेजा। 16 एहूद अपनी जाँघ
पर चोगे के नीचे हाथ भर लम्बी दोधारी
तलवार रखता था। 17 वही ईनाम को एग्लोन
के पास ले गया। 18 ईनाम देने वालों को एहूद
ने वापस भेज दिया। 19 वह स्वयं गिलगाल
के पास खुदी हुयी मूरतों के पास लौट गया।
उसने एग्लोन राजा को खबर भेजी कि वह
उस से कुछ कहना चाहता है। तब राजा
ने थोड़ी देर के लिए सभी को बाहर कर
दिया। 20 तब एहूद उसके पास गया। उसने
कहा, "प्रभु की ओर से मेरे पास एक सूचना
है। तभी एग्लोन गद्दी से उतर गया। 21 तभी
एहूद ने तलवार निकाली और उसके पेट पर
वार कर दिया। 22 वह आर पार हो गयी।
23 एहूद छज्जे से निकला और दरवाज़ा खींच
कर ताला लगा दिया। 24 उसके जाने के बाद
एग्लोन के नौकर-चाकर भीतर आए। उन्होंने
किवाड़ में ताला लगा देखा तो अनुमान
लगाया कि वह लघुशंका के लिए गया होगा।
25 काफी इन्तज़ार के बाद उन लोगों ने चाभी
से ताला खोला और देखा कि एग्लोन मरा
पड़ा है। 26 इसी बीच एहूद भाग निकला
और जाकर सेईर में शरण ली। 27 एप्रैम के
पहाड़ी इलाके में उसने तुरही फूँकी और
इस्राएली उसके पीछे हो लिए 28 उसने कहा,
"मोआबियों को प्रभु ने हमारे हाथ में दे
दिया है।" तभी वे आगे बढ़े और यरदन के
घाटों को ले लिया और किसी को उतरने न
दिया। 29 उस समय उन्होंने तकरीबन दस
हज़ार मोआबियों को मार डाला।; वे सभी
ताकतवर थे, लेकिन उनमें से एक भी न
बचा। 30 इस तरह मोआब उस समय इस्राएल
के हाथ के नीचे आ गया।तब अस्सी साल
तक देश में शान्ति बनी रही। 31 इसके बाद
अनात का बेटा शमगर हुआ, उसने छ: सौ
पलिश्ती आदमियों को बैल के पैने से मार
डाला; इसलिए उसे भी इस्राएल को आज़ाद
करनेवाला कहा जाता है।

4 एहूद के मरने के बाद इस्राएली फिर
बिगड़ गए। 2 इसलिए प्रभु न उन्हें कनान
के बादशाह याबीन के नीचे कर दिया। उस
का सेनापति सीसरा था। 3 इस्राएलियों ने
फिर से प्रभु को पुकारा। 4 बीस साल तक
सीसरा इस्राएलियों पर अन्धेर करता रहा।
5 वह एप्रैम के पहाड़ी इलाके में रामा और
बेतेल में खजूर के पेड़ के नीचे बैठ करती
थी। 6 एक दिन उसने अबीनोअम के बेटे
बाराक को बुलाया और कहा,"क्या प्रभु
का यह हुक्म नहीं है कि तुम ताबोर पहाड़
पर नप्तालियों और जबूलूनियों के दस हज़ार
आदमियों को अपने साथ ले जाओ। 7 मैं
सीसरा और उसके साथ के लोगों को तुम्हारी
ओर खींच लाऊँगा और तुम्हारे सुपुर्द कर
दूँगा। 8 बाराक ने उस से कहा,"यदि तुम मेरे
साथ आओगी तो मैं आऊँगा।" 9 वह बोली,
"हाँ, मैं बिल्कुल चलूँगी, तब कोई भी तुम्हारी
बड़ाई न करेगा।" तब दबोरा बाराक के साथ
केदेश गयी। 10 तब बाराक ने जबूलून और
नप्ताली के लोगों को केदेश में बुलवाया और
साथ में दस हज़ार आदमी आ गए। दबोरा
भी साथ में हो ली। 11 हेबेर, केनी ने जो मूसा
के साले होबाब के वंश का था, केदेश के
निकट सानन्नीम के बांझ पेड़ तक जाकर
अपना डेरा डाला था। 12 सीसरा को समाचार
मिलते ही कि ओबीनोअम का बेटा बाराक
ताबोर पहाड़ पर चढ़ गया है, 13 सीसरा ने
अपने नौ सौ रथों और लोगों के हेरोशेत से

कीशोन नदी पर बुलवाया। 14 तब दबोरा ने
बाराक को उठने के लिए कहा। उसने यह
भी कहा कि आज जीत का दिन है और
प्रभु हमारे आगे-आगे हैं। तभी बाराक तथा
उसके दस हज़ार आदमी ताबोर पहाड़ से
नीचे आए। 15 तभी सीसरा और उसके लोगों
को प्रभु ने घबराहट में डाल दिया और सीसरा
रथ से उतर कर भागा। 16 बाराक ने उनका
पीछा किया और उन्हें चुन-चुन कर मारा।
और कोई भी बच न सका याएल हेबेर केनी
की पत्नी थी। 17 सीसरा याएल के तम्बू' की
ओर भागा। 18 तब याएल उस से मिलने बाहर
आयी और कहा, "मेरे पास आओ, डरो
मत।" जब वह भीतर गया, उसने उसके ऊपर
कम्बल डाल दिया। 19 तब सीसरा बोला,"
मुझे पानी पिला दो।" उसने उसे दूध पिला
कर फिर से उढ़ा दिया। 20 सीसरा ने उस से
कहा कि यदि कोई आकर कोई पूछे तो बता
देना कि यहाँ कोई नहीं है। 21 जब वह सो
गया तो याएल ने उसकी कनपटी में एक खूँटी
ठोंक दी, जिस की वजह से वह मर गया।
22 इसी बीच बाराक उसे ढूँढते-ढूँढते आया।
आएल उस से बोली, "तुम इधर आओ, तुम
जिसे ढूँढ रहे हो, उसे मैं दिखाती हूँ।" वहाँ
उसने उसकी लाश देखी। 23 इस तरह उस
दिन कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों
के सामने शर्मिन्दगी झेलनी पड़ी। 24 और
इस्राएली कनान के राजा याबीन से ज़्यादा
ताकतवर होते गए। यहाँ तक कि उन्होंने
याबीन को बर्बाद ही कर डाला।

5 उसी दिन दबोरा और बाराक ने यह
गाना गाया, 2 प्रभु परमेश्वर की बड़ाई
करो, क्योंकि जब इस्राएल ने अपने आप
को प्रभु के हवाले किया तब प्रभु ने उसके
दुश्मनों से बदला लिया। 3 हे राजाओं, और
अधिकारियो, सुनो। मैं प्रभु के लिए गीत
गाऊँगी। इस्राएल के प्रभु का मैं भजन कीर्तन
करूँगी। 4 हे प्रभु, जब आप सेईर से निकले,
जब आप एदोम देश से निकले, तब पृथ्वी
हिल गयी और आकाश टूट पड़ा और बारिश
होने लगी 5 प्रभु की शक्ति से सीनै पहाड़
पिघलने लगा 6 अनात के बेटे शमगर के दिनों
में और याएल के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी हुई
थीं। और पगडंडियों पर मुसाफ़िर नहीं दिखते
थे। 7 जब तक दबोरा ने माता की भूमिका
न ली, तब तक गाँव वीरान थे। 8 लोग
नए-नए देवताओं को अपनाने लगे, उस वक्त
फ़ाटकों में लड़ाई हुआ करती थी। क्या
चालीस हज़ार इस्राएलियों में एक के पास भी
ढाल या बर्छी नहीं दिखती थी। 9 इस्राएल के
अधिकारियों की ओर जो लोग अपनी इच्छा
से भरती हुए, उनकी तरफ़ मेरा मन लगा
हुआ है। वे प्रभु की बड़ाई करे। 10 हे सफ़ेद
गदहियों पर चढ़ने वालो, फर्शों पर बैठने
वालो, रास्ते पर पैदल चलने वालो, ध्यान
देना। 11 पनघटों के आस-पास धनुर्धारियों
की बातचीत की वजह से, वे प्रभु के इन्साफ़
के कामों और इस्राएल में उसके फ़ौजियों के
अच्छे कामों की चर्चा करेंगे। उस समय प्रभु
की प्रजा के लोग फ़ाटकों के पास गए। 12 हे
दबोरा, जाग जाओ, गीत सुनाओ। बाराक
उठो, अबीनोअम के बेटे अपने कैदियों को
गुलामी से निकाल लो। 13 तब बचे हुए लोग
अमीरों के पास उतर आए। प्रभु के लोग
शक्तिशाली लोगों के साथ मेरे पास आए।
14 जिन की जड़ अमालेक में है, वे लोग
एप्रैम से आए थे। हे बिन्यामीन तुम्हारे पीछे
तुम्हारे दलों में माकीर में से अधिकारी और
जबूलून में से सेनापति की सज़ा लिए हुए
उतरे। 15 इस्साकार के अधिकारी दबोरा के
साथ हो लिए। इस्साकार की तरह बाराक

भी था। वे तुरन्त तराई में उसके पीछे हो
लिए। रूबेन की नदियों के निकट बड़े-बड़े
कामों का इरादा किया गया। 16 तुम गड़रियों
को सीटी सुनने के लिए भेड़शालों के बीच
क्यों बैठे रहे? बड़े कामों के बारे में रूबेन के
कुलों में लोगों के मन टटोले गए। 17 यरदन
के पास गिलाद रह गया, जहाज़ों में दान क्यों
रह गया? समुन्दर के किनारे आशेर बैठा रहा
और खाड़ियों के पास रह गया। 18 जबूलून
के लोगों ने अपनी जान की बाजी लगा दी।
ऐसा ही नप्तालियों ने किया। 19 राजा लड़ने
आए। कनान के राजा ने मगिद्दो के सोतों
के पास आकर युद्ध किया, लेकिन लूट की
चाँदी उनके हाथ न लगी। 20 आकाश के
सितारों ने युद्ध छेड़ दिया। अपनी कक्षाओं
ही में सीसरा से लड़े। 21 कीशोन नदी के
बहाव में वे बह चले। हे मेरे मन हिम्मत
के साथ आगे बढ़ो। 22 तब उसके ताकतवर
घोड़ों के दौड़ने से, घोड़ों की टाप की ऊँची
आवाज़ आने लगी। 23 प्रभु का दूत कहता
है, "मेरोज को और उसके निवासियों को
शाप दो, क्योंकि योद्धाओं के खिलाफ़ प्रभु
की मदद करने वे सामने नहीं आए।" 24 केनी
हेबेर की पत्नी याएल सब महिलाओं से बढ़
कर है। तम्बुओं में रहने वाली महिलाओं में
से ज़्यादा आशीषित वही है। 25 सीसरा के
पानी मांगे जाने पर उसने दूध दिया था। एक
खूबसूरत कटोरे में उसने उसे दही परोसा।
26 अपना हाल उसने तम्बू की खूँटी और
हथौड़े की तरफ़ बढ़ाया। फिर सीसरा पर
हमला बोल कर उस का सिर फोड़ दिया तथा
कनपटी को आर पार छेद दिया। 27 महिला
के पैरों के बीच वह गिरा और पड़ा रहा।
वहीं वह मरा पड़ा रहा। 28 खिड़की में से
एक महिला[a] देख कर पुकार उठी, "उसके
रथों के आने में देर क्यों हो रही है ?"
29,30 उसकी बुद्धिमान राजकुमारियाँ कहती
रहती हैं, "क्या वे लूट का माल बाँट तो नहीं
रहे हैं? हर एक सैनिक को एक-एक या दो-दो
कुमारियाँ, और सीसरा को रंगे हुए कपड़ों की
लूट, हाँ, कशीदा किए हुए रंगीन कपड़ों की
लूट, साथ ही लूटने वालों के गले के लिए
दोनों ओर से कशीदा किए हुए रंगीन कपड़े
नहीं मिले ? 31 हे प्रभु, इसी तरह से आपके
सभी दुश्मन बर्बाद हो जाएँ, लेकिन वे जो
प्रभु का भय मानते[b] हैं, वे लोग उगते हुए
तेज सूरज की तरह होंगे। इसके बाद देश में
चालीस साल तक शान्ति रही।

6 इस्राएली प्रभु की इच्छा के विरोध में
फिर से चलने लगे। इसलिए प्रभु ने
उन्हें मिद्यानियों के वश में सात साल तक
कर दिया। 2 मिद्यानी लोग ज़ोरावर होते
गए। मिद्यानियों के डर से उन्होंने पहाड़ों
की खाईयों, गुफ़ाओं और किलों को चुना
कि उन में छिप जाएँ। 3 जब जब इस्राएली
बीज बोते थे, तभी मिद्यानी पूर्वी लोगों और
अमालेकियों के साथ आकर हमला बोल
देते थे। 4 वे लोग गाज़ा तक छावनी डाल
कर सारी फ़सल नाश करने के साथ, खाने
की चीजों, जानवर जैसे भेड़, बैल और गदहे
आदि को भी नहीं छोड़ते थे। 5 क्योंकि वे
अपने जानवरों के साथ टिड्डियों की तरह
आया करते थे और सब कुछ उजाड़ डालते
थे। 6 ऐसी बुरी हालत में इस्राएलियों ने प्रभु
को पुकारा। 7,8 इसलिए प्रभु ने उनके पास
एक नबी भेज कर कहा, '' मैं ही तुम्हें
मिस्र की गुलामी से निकाल कर लाया हूँ।
9 मिस्रियों के चंगुल से और दुश्मनों से तुम्हें
आज़ाद करके तुम्हें उनकी ज़मीन दे दी।"

[a] **5.28** सीसरा की माँ [b] **5.31** प्रेम करते

10 मैंने यह भी कहा," मैं तुम्हारा प्रभु हूँ
तुम एमोरियों के देवताओं को मत पूजना।
लेकिन तुमने मेरी एक न सुनी" 11 फिर प्रभु
का दूत बांज पेड़ के नीचे बैठ गया। यह
ओप्रा इलाके में अबीएज़ेरी योआश का था।
उस वक्त उस का बेटा गिदोन एक दाखरस
के कुण्ड में मिद्यानियों के डर से गेहूँ साफ़
कर रहा था। 12 प्रभु के दूत ने दर्शन देकर
उस से कहा," हे शक्तिशाली सैनिक, प्रभु
तुम्हारे साथ हैं।" 13 तब गिदोन ने जवाब
दिया,"हे मेरे मालिक, यदि प्रभु हमारे संग
हैं, तो यह सब हमारे साथ क्यों हुआ है ?
जिन बड़े कामों के बारे में हमारे बुज़ुर्ग लोग
बताया करते थे, वे कहाँ रहे ? प्रभु ने हमें
छोड़ दिया है और मिद्यानियों के कब्ज़े में
कर दिया है।" 14 तब प्रभु ने उस पर नज़र
डाली और कहा, "तुम्हारे पास जो ताकत है,
उसी के बल पर जाओ और इस्राएलियों को
मिद्यानियों से मुक्ति दो।" 15 वह बोला,"हे
प्रभु, मैं ऐसा किस तरह से कर पाऊँगा?
मनश्शे में मेरा परिवार सब से छोटा है और मैं
अपने परिवार में सब से छोटा हूँ। 16 लेकिन
प्रभु ने उस से कहा, "मैं तुम्हारे संग ज़रूर
रहूँगा तुम मिद्यान को एक आदमी की तरह
हरा दोगे। 17 तब गिदोन बोला,"यदि ऐसा है
तो मुझे इस बात का कोई निशान[a] दिखाईये।
18 जब तक मैं आकर अपनी भेंट आपके
सामने न रखूँ तब तक आपकी उपस्थिति बने
रहे।" वह बोला, "ठीक है। 19 तब गिदोन
भीतर गया और बकरी का एक बच्चा और
एक एपा मैदे की अखमीरी रोटियाँ बनायीं।
गोश्त और रोटियाँ लाकर उसने बांज पेड़ के
नीचे अर्पण किया। 20 प्रभु के दूत ने उस से
कहा, "गोश्त और अखमीरी रोटियाँ चट्टान
पर रखो और द्रव[b] को उस पर उण्डेल दो।"
उसने वैसा किया भी। 21 तब प्रभु के दूत
ने अपने हाथ की छड़ी के सिरे से गोश्त
और अखमीरी रोटियों को छू लिया। चट्टान
में से आग निकली और सारा खाना जल कर
राख हो गया। इसके तुरन्त बाद प्रभु का दूत
गायब हो गया। 22 यह जान कर कि ज़रूर
यह प्रभु का दूत है, गिदोन बोल उठा," हाय
प्रभु परमेश्वर, मैंने तो प्रभु के दूत को अपनी
आँखों से देख लिया है।" 23 प्रभु ने उस से
कहा,"तुम्हें शान्ति मिले, डरो मत, तुम मरोगे
नहीं।" 24 उसी समय गिदोन ने एक वेदी बना
कर उस का नाम 'शालोम' रख दिया। 25 उसी
रात को गिदोन से प्रभु ने बात की,"अपने
पिता का बैल, सात साल का एक और बैल
लो। फिर अपने पिता की बाअल और अशेरा
की वेदी को तोड़ डालो। 26 जो तरीका मैंने
तुम्हें बताया है, वैसे ही अपने प्रभु परमेश्वर
के लिए एक वेदी बनाओ। दूसरे वाले बेल
को लो और काटी हुयी अशेरा की लकड़ी से
होमबलि चढ़ाओ।" 27 तब प्रभु के कहने के
मुताबिक अपने दस नौकरों को उसने साथ
में लिया और वैसा ही किया, जैसा उस से
कहा गया था। अपने पिता के परिवार और
नगर के लोगों के डर से उसने यह सब रात
ही में किया। 28 सुबह के समय लोगों ने देखा
कि बाल की वेदी टूटी हुयी है, अशेरा को
तोड़ डाला गया है। साथ ही एक नई वेदी
पर दूसरा बैल चढ़ाया गया है। 29 आपस
में लोगों में चर्चा होने लगी कि ऐसा काम
किस ने किया। खोजबीन के बाद पता चला
कि यह योआश के बेटे गिदोन का काम है।
30 तब नगर के लोगों ने योआश से कहा
कि वह अपने बेटे को घर से बाहर लाए
ताकि उसे जान से मार डाला जाए, क्योंकि
उसने बाल और अशेरा का अपमान किया

[a] **6.17** सबूत [b] **6.20** शोरवे या रसा

है। 31 योआश बोला, “क्या तुम बाअल का
पक्ष लोगे? जो व्यक्ति उस का पक्ष लेगा, उसे
प्रातःकाल तक अपनी जान गवाँनी पड़ेगी।
यदि बाअल देवता है तो वह खुद जानता
होगा कि किस ने ऐसा काम किया है। 32 उसी
दिन गिदोन का नाम यरूब्बाल रखा गया।
33 तभी सारे मिद्यानी और अमालेकी वहाँ
इकट्ठे हुए। यिज्रेल में आकर उन्होंने डेरे डाल
दिए। 34 फिर गिदोन पर प्रभु का आत्मा उतरा
और उसने नरसिंगा फूँक कर अबीएज़री
लोगों को अपने साथ होने के लिए कहा।
35 फिर उसने मनश्शे में दूत भेजे और वे उस
से मिलने आए। 36 तब गिदोन प्रभु से बोला,
“यदि अपने कहने के अनुसार आप इस्राएल
को मेरे द्वारा बचाएँगे, तो मुझे सबूत चाहिए।”
37 मैं कुछ ऊन खलिहान में रखने जा रहा हूँ।
यदि रात की ओस केवल ऊन पर पड़े और
सारी ज़मीन सूखी रहे, तो मैं जान जाऊँगा,
कि आप इस्राएलियों की जीत के लिए मुझे
इस्तेमाल करेंगे।” 38 ऐसा हुआ भी। दूसरे
दिन सवेरे उसने ऊन को निचोड़ा, तो एक
कटोरा पानी निकला। 39 गिदोन ने फिर से
प्रभु को परखना चाहा और कहा,“यदि आप
गुस्सा न हों, तो एक बार फिर मुझे सबूत दें।
इस बार ऊन सूखा रहे ज़मीन गीली हो जाए।”
40 इस बार प्रभु ने ऐसा ही होने दिया। ऊन
सूखा रहा और सारी ज़मीन गीली हो गयी।

7 तब गिदोन और उसके लोगों ने हरोद
नामक सोते के पास अपने डेरे डाले।
उनके उत्तर में मोरे नामक पहाड़ी के पास
तराई में मिद्यानियों की छावनी थी। 2 तब
प्रभु ने गिदोन से कहा,“जो लोग तुम्हारे साथ
हैं, उनकी गिनती इतनी है कि मैं उनके द्वारा
मिद्यानियों को हरावाऊँगा नहीं। ताकि बाद में
इस्राएल यह न कहने पाए, कि हम ने अपनी
ताकत से जीत हासिल की है। 3 इसलिए
अब तुम जाओ और ऐलान कर दो,” जो
कोई डरपोक है, वह गिलाद पहाड़ पर चला
जाए।” इसलिए बाईस हज़ार लोग वापस
चले गए, केवल दस हज़ार लोग रह गए।
4 तब प्रभु गिदोन से बोले,“लोगों की संख्या
अभी भी अधिक है, तुम उन्हें सोते के पास
ले जाओ, वहीं उनको परखा जाएगा। मैं जिन
की मंज़ूरी दूँ, वही तुम्हारे साथ जाने पाएँ।
5 इसलिए वह लोगों को सोते के पास ले
गया। प्रभु ने गिदोन से कहा,“हर एक जो
कुत्ते की तरह चपड़-चपड़ करके पानी पीता
है, उसे अलग रखना। उन लोगों को भी जो
घुटने टेककर पानी पीते है। 6 जिन लोगों ने
मुँह में हाथ लगा कर चपड़ - चपड़ करते
हुए पानी पिया, वे संख्या में तीन सौ थे।
बाकी लोगों ने पानी पीने के लिए घुटने टेके
थे। 7 गिदोन से प्रभु ने कहा,“मैं तुम्हें इन
तीन सौ चपड़-चपड़ करने वालों से जीत
दिलवाऊँगा, इसलिए बाकी लोग वापस चले
जाएँ।” 8 इसलिए तीन सौ लोगों ने तैयारी
की और हाथ में नरसिंगे लिए।गिदोन ने दूसरे
सभी इस्राएलियों को उनके डेरों में जाने को
कहा,लेकिन तीन सौ लोगों को अपने साथ
ही रखा।मिद्यानियों की छावनी नीचे घाटी में
ही थी। 9 उसी रात प्रभु ने कहा,“उठो नीचे
जाओ और हमला बोल दो, मैंने तुम्हें जीत
दे दी है। 10 लेकिन यदि तुम्हें नीचे जाने में
डर लग रहा है तो अपने सेवक फूरा के
साथ जाओ। 11 उनकी बातों को सुनने से
तुम्हें मालूम पड़ेगा कि उनकी क्या बातचीत
हो रही है; तब उन पर हमला करने के लिए
तुम्हारी हिम्मत बढ़ेगी।” इसलिए वह फूरा के
साथ वहाँ पहुँचा। 12 मिद्यानी और अमालेकी
और पूर्व के लोग टिड्डियों की तरह फैले हुए
थे। उनके ऊँट भी अनगिनित थे। 13 गिदोन

के वहाँ पहुँचने पर एक आदमी अपने दोस्त
को अपना सपना बतला रहा था। वह कह
रहा था, '' मेरे सपने में एक रोटी लुढ़कते
हुए मिद्यान की छावनी में आई और तम्बू
को टक्कर मारी। वह तम्बू इस कारणवश गिर
गया।" 14 उस का दोस्त बोला," यह योआश
के बेटे गिदोन के अलावा और कोई नहीं हो
सकता। प्रभु ने मिद्यान और सारी छावनी को
उसके सुपुर्द कर दिया है। 15 गिदोन ने सपने
और उसके अर्थ को सुन कर प्रभु की बड़ाई
की और इस्राएल की छावनी में जाकर वहा,"
सब लोग उठ जाओ, क्योंकि हम ने दुश्मन
को जीत लिया है।" 16 तब उसने तीन सौ
लोगों को तीन हिस्सों में बाँट दिया। सभी के
हाथों में उसने एक एक नरसिंगा, खाली घड़ा
और घड़े में मशाल दी। 17 उसने उस से कहा
कि वे सभी उसे देखते रहें और वह जैसा कहे,
वैसा ही किया जाए। 18 यह भी कि उसके
और उसके साथियों के नरसिंगा फूँकते ही
वे लोग छावनी के चारों ओर नरसिंगा फूँक
और ललकार कर कहें "प्रभु के लिए, गिदोन
के लिए।" 19 बीच रात में जैसे ही सैनिक
पहरेदार बदले, तभी गिदोन और उसके साथ
के 20 लोग छावनी की सरहद तक पहुँचे।
वहाँ पहुँचकर उन्होंने नरसिंगे फूँके और घड़े
फोड़ दिए। ऐसा करने के बाद तीनों दलों ने
ज़ोर से आवाज़ की, "प्रभु की तलवार और
गिदोन की तलवार।" 21 इसके बाद वे सभी
छावनी के चारों ओर अपनी-अपनी जगह
खड़े रहे और फ़ौज के सिपाही दौड़ने लगे।
इस तरह से चिल्ला-चिल्ला कर उन्होंने लोगों को
भगा दिया। 22 तीन सौ नरसिंगे फूँके गए और
प्रभु ने एक-एक आदमी की तलवार उसके
साथी पर और पूरी सेना पर चलवायी। इस
कारणवश फ़ौजी सरेरा की तरफ़ बेतशित्ता
तक और तब्बात के पास के आबेलमहोला
तक भाग गए। 23 तब इस्राएली आदमियों को
नप्ताली और आशेर और मनश्शे से बुलाया
गया। उन्हीं ने मिद्यानियों का पीछा किया।
24 गिदोन ने एप्रैम के पूरे पहाड़ी देश में
यह समाचार पहुँचाने के लिए संदेशवाहक
भेजे,"कि मिद्यानियों से निबटने के लिए
आओ। तुम आकर यर्दन नदी के घाटों को
बेतबार तक उन से पहले अपने कब्ज़े में कर
लो।" 25 उन्होंने मिद्यान के दो गवर्नरों-ओरेब
और जेब को पकड़ लिया। फिर ओरेब को
ओरेब नामक चट्टान पर और जेब को जेब
नामक दाखरस के कुण्ड पर जान से मार
डाला। उन दोनों के सिर वे गिदोन के पास
ले आए।

8 तब एप्रैमी लोगों गिदोन से झगड़ते हुए
कहने लगे, "जब तुम मिद्यान से युद्ध
करने गए थे, तब हम को साथ में क्यों नहीं
लिया था ?" 2 गिदोन बोला,"यदि तुम्हारे से
तुलना करें, तो मैंने हासिल ही क्या किया
है? क्या एप्रैम की उपज के बचे कुचे अंगूर
अबीएज़ेर के मेरे छोटे गोत्र की पूरी उपज
से बेहतर नहीं है? 3 मिद्यान, ओरेब और
जेब के गवर्नरों को प्रभु ने तुम्हारे हाथ में
दे दिया है। तुम्हारी तुलना में, तब मैं क्या
कर सका था? इसके बाद ही गिदोन के
प्रति जो गुस्सा उनके मन था, वह शान्त
हो गया। 4 तब गिदोन और उसके साथ के
तीन सौ आदमी जो थकने के बावजूद पीछा
करते रहे थे, यर्दन के किनारे पार उतर आए।
5 तब गिदोन ने सुक्कोत के लोगों से कहा,"
मेहरबानी से मेरे बाद में आने वाले लोगों को
खाना दो, क्योंकि वे पूरी तरह से थक चुके
हैं। मैं अभी मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना
नामक बादशाहों का पीछा कर रहा हूँ।"
6 सुक्कोत पर राज्य करने वाले बोले, "क्या

वे दोनों तुम्हारे हाथ में आ चुके है, कि हम
तुम्हारी फ़ौज को खाना खिलाएँ?" 7 गिदोन
बोला,"ठीक है, जब प्रभु मेरे हाथ में जेबह
और सल्मुन्ना को कर देंगे तब मैं तुम्हारी देह
जंगल में कटीली झाड़ियों और बिच्छुओं से
कटवाऊँगा।" 8 वहाँ से वह पनूएल पहुँचा
और वहाँ के लोगों से भी यही कहा। लेकिन
पनूएल के लोगों की प्रतिक्रिया बिल्कुल वैसी
थी, जैसी सुक्कोत की। 9 पनूएल के लोगों
से भी उसने कहा,"वापस सही-सलामत
आने पर मैं इस मीनार को गिरा दूँगा।"
10 पन्द्रह हज़ार फ़ौजियों के साथ जेबह और
सल्मुन्ना ककोर में थे। पूर्वियों की पूरी फ़ौज
में से उतने ही बाकी बचे थे। तलवार से
मारे गए लोग एक लाख बीस हज़ार थे।
11 तब गिदोन नोबह और योग्बहा के पूरब में
तम्बुओं में रहने वालों के रास्ते से चढ़ गया।
उस समय छावनी बेखबर थी, तभी उसने
हमला बोल दिया। 12 जेबह और सल्मुन्ना
के भागने पर उसने उनका पीछा किया
और मिद्यानियों के दोनों राजा, जेबह और
सल्मुन्ना को पकड़ लिया उनकी पूरी सेना
को उसने बिखरा दिया। 13 तभी योआश का
बेटा गिदोन हेरेस घाटी की लड़ाई से वापस
आया। 14 उसने सुक्कोत के एक नवजवान को
पकड़ा और पूछ-ताछ की। उसने सुक्कोत के
सत्तहत्तर राजकुमारों और बुज़ुर्गो के नाम-पते
लिखे। 15 सुक्कोत के लोगों ने पास आकर
कहा,"जेबह और सल्मुन्ना यहाँ है। जब हम
यहाँ तुम्हारे पास थे, तब तुम ठट्ठा करके
कह रहे थी। "जेबह और सल्मुन्ना को पहले
हिरासत में ले लो, तब हम तुम्हारी थकी
हुयी फ़ौज को खाना देंगे। 16 तब उस नगर
के बुज़ुर्गों को उसने पकड़ा और जंगल की
कटीली झाड़ियों तथा बिच्छू पौधों से सुक्कोत
के लोगों को तकलीफ़ दी। 17 पनूएल की
मीनार को उसने गिरा दिया और उस नगर
के लोगों को मार डाला। 18 तब उसने जेबह
और सल्मुन्ना को कहा,"जिन लोगों को तुमने
ताबोर पर मार डाला था, वे कैसे थे? उन्होंने
कहा, "वे तुम्हारी तरह ही थे। हर एक की
शक्ल राज-पुत्र की तरह थी।" 19 उसने कहा,
"वे मेरे भाई थे। वे मेरी ही माँ के बेटे थे। प्रभु
के जीवन की कसम, यदि तुमने उन्हें ज़िन्दा
छोड़ दिया होता, तो मैं तुम्हें न मारता।"
20 तब उसने अपने बड़े बेटे येतेर से कहा,"
उठो, इन का कत्ल कर डालो।" लेकिन
नवजवान ने अपनी तलवार न उठायी। वह
डर इसलिए गया क्योंकि छोटा ही था। 21 तब
जेबह और सल्मुन्ना बोल उठे, "तुम खुद उठो
और हम पर हमला करो क्योंकि जैसा इन्सान
होता है वैसी ही उसकी ताकत होती है।"
इसलिए गिदोन उठा और जेबह व सल्मुन्ना
का कत्ल कर डाला और उन चन्द्रहारों को
ले लिया जो उनके ऊँटों की गर्दन पर थे।
22 तब इस्राएल के आदमियों ने गिदोन से
कहा, "तुम हमारे ऊपर राज्य करो। तुम्हारा
बेटा और पोता भी राज्य करें, क्योंकि तुमने
हम को मिद्यान के हाथ से आज़ाद किया
है। 23 गिदोन उन से बोला,"तुम पर मैं राज्य
नहीं कर सकता और न ही मेरा बेटा। प्रभु
ही तुम पर राज्य करें। 24 फिर गिदोन ने उन
से कहा,"मैं तुम से कुछ मांगता हूँ। तुम
मुझे अपने लूटे हुए सामान में से बालियाँ दे
दो। वे बोले,"हम ज़रूर देंगे।" 25 तब उन्होंने
एक कपड़ा बिछाया और बालियाँ उस पर
डाल दीं। 26 उन बालियों का वज़न एक
हज़ार सात सौ शेकेल था। इसके अलावा
चंद्रहार, झुमके और बैगनी रंग के कपड़े
जो मिद्यानियों के राजा पहने थे। साथ ही
उनके ऊँटों के गलों की जंजीरें। 27 गिदोन
ने इन सभी गहनों का एक एपोद बनवाया

और ओप्रा नगर में रखा। सभी इस्राएलियों ने
उसकी पूजा की। इसी वजह से यह गिदोन
और उसके परिवार के लिए एक फन्दा बन
गया। 28 इस तरह मिद्यानी इस्राएलियों के
हाथ के नीचे ही रहे और विद्रोह करने की
हिम्मत न की। अगले चालीस साल जब
तक गिदोन ज़िन्दा था देश में शान्ति रही।
29 योआश का बेटा यरूब्बाल अपनेार में
रहने लगा था। 30 गिदोन के तमाम पत्नियाँ
होने की वजह से उसके सत्तर बेटे थे।
31 शेकेम में रहने वाली उसकी रखेल से जो
बेटा हुआ, उस का नाम अबीमेलेक रखा
गया। 32 बुढ़ापे में गिदोन मर गया और ओप्रा
नामक गाँव में जहाँ उसके पिता को दफ़नाया
गया था, उसे भी दफ़ना दिया गया। 33 उसकी
मौत के बाद इस्राएली फिर से बालबरीत की
पूजा करने लगे। 34 जिस प्रभु ने उन लोगों
को दुश्मनों से छुड़ाया था, उन्हें वे भूल गये।
35 गिदोन के मरने के तुरन्त बाद इस्राएलियों
ने बालबरीत को अपना प्रभु मान लिया और
बाल की मूर्ति की महिमा गाने लगे।

9 अबीमेलेक शेकेम गया और वहाँ अपने
मामा लोगों से और नाना के परिवार
से मिला। 2 उसने कहा,"शेकेम के वासियों
से पूछो कि उनके लिए भला क्या है, यह
कि गिदोन के सत्तर बेटे तुम्हारे ऊपर शासन
करें या एक ही आदमी? यह मत भूलना
कि मैं भी तुम्हारा एक हिस्सा हूँ। 3 उसके
मामाओं ने वहाँ के लोगों से यह सवाल
पूछा। तब सभी को यह बात पसन्द आयी,
कि वे एक आदमी[a] को ही अपना अगुवा
मानें। 4 तब उन लोगों ने बालबरीत के मन्दिर
में से चाँदी के सत्तर शेकेल उसको दिए।
इस राशि से अबीमेलेक ने किराए पर नीच
और लुच्चे लोग रख लिए, जो उसकी की
मानने लगे। 5 तब वह ओप्रा में अपने पिता
के घर गया। उसने अपने सत्तर भाईयों को
एक ही पत्थर पर मार डाला। लेकिन सब
से छोटा योताम छिपकर बच गया। 6 इसके
बाद शेकेम और बेतमिलो के सभी लोगों
ने अबीमेलेक को राजा बनाया। 7 यह खबर
मिलते ही योताम गरिज्जीम पहाड़ के ऊपर
चढ़कर ऊँची आवाज़ से बोला, "हे शेकेम
के वासियों, यदि तुम चाहते हो कि प्रभु
तुम्हारी सुने तो मेरी सुनो, 8 एक बार की
बात है पेड़ किसी का अभिषेक करके अपने
ऊपर राजा बनाने के लिए तैयार हुए। उन्होंने
जैतून के पेड़ से कहा कि वह उन पर राजा
बन जाए।" 9 जैतून का पेड़ बोला,"क्या मैं
अपना चिकनापन छोड़कर, जिस की वजह
से लोग प्रभु और इन्सानों दोनों को इज़्ज़त
देते हैं, पेड़ों का शासक बन कर इधर-उधर
फिरता रहूँ? 10 इसके बाद पेड़ों ने अंजीर के
पेड़ से बिनती की, "हमारे ऊपर अधिकारी
बन जाओ।" 11 अंजीर के पेड़ ने जवाब
दिया,"क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे
फलों को छोड़कर पेड़ों पर राज्य करूँ और
मारा-मारा फिरूँ?" 12 फिर पेड़ों ने अंगूर की
लता से कहा कि वह उन सभी के ऊपर
राज्य करे। 13 अंगूर की लता बोली,"क्या मैं
अपने नए रस को छोड़कर जिस से प्रभु और
इन्सान दोनों ही खुश होते हैं, अधिकारिणी
बन कर इधर-उधर भटकूँ? 14 तब सभी
पेड़ों ने झड़बेरी से कहा,"तुम हम पर राज्य
करो।" 15 झड़बेरी बोली,"यदि सचमुच तुम
चाहते हो तो मेरी छांह में आओ और नहीं
तो झड़बेरी से निकली आग लबानोन के
देवदारों को जला डालेगी। 16 इसलिए यदि
तुमने ईमानदारी से अबीमेलेक को राजा

[a] **9.3** अबीमेलेक

बनाया है और गिदोन तथा उसके परिवार
के साथ सही व्यवहार किया है तो अच्छा
है। 17 मेरे पिता ने तुम्हारे लिए लड़ाई लड़ी
और अपनी जान हथेली पर रख कर तुम्हें
मिद्यानियों के शिकंजे से छुड़ाया। 18 लेकिन
आज तुम लोगों ने मेरे पिता के खिलाफ़
अपना सिर उठाया है। उसके सत्तर बेटों को
मार डाला तथा रखैल के बेटे अबीमेलेक
को शेकेम के ऊपर राजा ठहराया, क्योंकि
वह तुम्हारा भाई है? 19 इसलिए यदि तुमने
आज के दिन यरूब्बाल[a] और उसके परिवार
के साथ अच्छा बर्ताव किया है तो तुम
भी खुश हो और वह भी। 20 यदि नहीं तो
अबीमेलेक से ऐसी आग निकले, जिस से
शेकेम के लोग और बेतमिल्लो जल जाएँ।
शेकेम के लोगों और बेतमिल्लो से ऐसी आग
निकली कि अबीमेलेक भस्म हो जाए।"
21 तब योताब वहाँ से भाग खड़ा हुआ और
अपने भाई अबीमेलेक के डर से बेर में जाकर
रहने लगा। 22 तीन साल तक अबीमेलेक
इस्राएल का गवर्नर रहा। 23 तब प्रभु ने
अबीमेलेक और शेकेम के लोगों के बीच
एक दुष्ट आत्मा भेज दी। इसलिए शेकेम के
लोग अबीमेलेक से धोखा-धड़ी करने लगे।
24 जिस से गिदोन के सत्तर बेटों पर किए
गए अत्याचार का परिणाम भुगता जाए। और
उनका खून उनको मारने वाले उनके भाई
अबीमेलेक के सिर पर और उसके अपने
भाईयों का खून करने में उनकी मदद करने
वाले शेकेम के लोगों के सिर पर भी है।
25 तब शेकेम के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों
पर उसके लिए मारने वालों को बैठाया, जो
उस रास्ते पर आने जाने वालों को लूटा
करते थे। इसकी खबर अबीमेलेक को भी
मिल गयी। 26 तब एबेद का बेटा गाल अपने
भाईयों के साथ शेकेम आया। शेकेम के
लोगों ने उस पर विश्वास रखा। 27 उन्होंने
मैदान में अपने अंगूर के बगीचे में अंगूर तोड़
कर रस निकाला। वे धन्यवाद की भेंट चढ़ाने
के बाद अपने देवता के मन्दिर में खाने पीने
में लग गए। वहाँ वे अबीमेलेक को बुरा
भला भी कहने लगे। 28 तब अबीमेलेक का
बेटा गाल बोला, "अबीमेलेक है कौन? और
शेकेम कौन है कि हम उसके नीचे रहें ?
क्या वह यरूब्बाल[b] का बेटा नहीं? क्या
जबूल उस का ऑफ़िसर नहीं? और शेकेम
की नींव डालने वाले हमोर के सेवक ? फिर
हम उसकी सेवा क्यों करें? शेकेम के पिता
हमोर के लोगों के तो अधीन हो, लेकिन हम
उसके अधीन क्यों रहें? 29 यदि ये लोग मेरे
अधिकार में रहे होते तो क्या ही अच्छा होता,
तब मैं अबीमेलेक को दूर कर सकता था।
फिर उसने अबीमेलेक से कहा, "अपनी फ़ौज
बढ़ाकर आ जाओ। 30 गाल की इन बातों
को सुनते ही गवर्नर जबूल आग बबूला हो
गया। 31 उसने बड़ी चालाकी से अबीमेलेक
के पास समाचार भिजवाया, कि एबेद का
बेटा गाल और उसके भाई शेकेम में आकर
नगर वालों को तुम्हारी खिलाफ़ करने के
लिए प्रेरित कर रहे हैं। 32 इसलिए तुम अपने
साथियों के साथ मिल कर रात ही में मैदान
में बैठ जाओ। 33 बड़े सवेरे इस नगर पर
हमला बोल देना। जब वह तुम्हारा मुकाबला
करे, तब तुम जो कर सको करना। 34 तब
अबीमेलेक और उसके साथी चार दल बना
कर रात ही में बैठ गए। 35 एबेद का बेटा गाल
बाहर नगर के फ़ाटक पर खड़ा हो गया। तभी
अबीमेलेक और उसके साथी भी खड़े हो
गए। 36 उन लोगों को देख कर गाल न जबूल
से कहा, "देखो, पहाड़ों की चोटियों से लोग

[a] **9.19** गिदोन [b] **9.28** गिदोन

उतर रहे हैं।" जबूल बोला, "वह तो पहाड़ों
की छाया है, जो तुम्हें लोगों की सी लग रही
है।" 37 गाल फिर बोला,"देखो, लोग चले
आ रहे हैं। एक दल मोननीम नामक बांज
पेड़ के रास्ते से चला आ रहा है। 38 जबूल
ने कहा,"अब क्या हुआ, तुम तो कहते थे
कि अबीमेलेक कौन है कि हम उसके उसके
अधीन रहें?" ये वे ही लोग हैं, जिन्हें तुम
फ़ालतू समझ रहे थे। अब मुकाबला करो
तो जानें। 39 तब गाल शेकेम के लोगों का
अगुवा बन गया और अबीमेलेक से लोहा
लिया। 40 अब अबीमेलेक ने उस का पीछा
किया, तो वह भाग निकला, लेकिन फ़ाटक
तक पहुँचते पहुँचते वह और साथी ज़ख्मी
हालत में ढेर हो गए। 41 इसके बाद अरूमा
में अबीमेलेक रहने लगा। जबूल ने गाल और
उसके भाईयों को निकाल दिया। 42 अगले
दिन अबीमेलेक को समाचार मिला कि लोग
मैदान में निकल गए हैं। 43 अपनी फ़ौज को
तीन हिस्सों में बाँटकर वह मैदान में आक्रमण
के लिए बैठ गया। जैसे ही लोग बाहर आए,
उन्हें मार डाला गया। 44 अपने साथ के दलों
सहित अबीमेलेक दौड़ा और फ़ाटक पर
खड़ा हो गया। दो दलों ने मैदान के लोगों पर
हमला करके उन्हें बर्बाद किया। 45 उसी दिन
उसने नगर को अपने अधिकार में कर लिया।
उसने वहाँ के लोगों को मौत के घाट उतार
दिया और नगर को तहस-नहस कर डाला।
46 यह समाचार मिलते ही शेकेम के वासियों
ने एलबरीत के मन्दिर में शरण ली। 47 जब
अबीमेलेक को यह मालूम पड़ा कि शेकेम
के लोग इन्कार हो गए हैं, 48 तब वह अपने
साथियों के साथ सलमोन नामक पहाड़ पर
चढ़ गया। कुल्हाड़ी से उसने पेड़ की एक
डाली काटी और उसे अपने कन्धे पर रखा।
उसने अपने साथियों को भी वैसा करने को
कहा 49 तब उन लोगों ने भी वैसा किया और
अबीमेलेक के किले में आग लगा दी। तब
शेकेम के गुम्मट के सभी आदमी-औरत मर
गए। 50 तब अबीमेलेक तेबेस गया। उसने
उसे ले लिया और वहाँ तम्बू गाड़ दिए।
51 लेकिन उस नगर के बीच एक मज़बूत
गुम्मट था उसी गुम्मट में सभी लोग घुस गए
और उसे बन्द करके ऊपर चढ़ गए। 52 तब
अबीमेलेक गुम्मट के पास गया और लड़ाई
में लग गया और आग लगाने के लिए दरवाज़े
तक पहुँचा। 53 तभी एक महिला ने चक्की के
पाट को अबीमेलेक के सिर पर पटक दिया,
जिस से उस का सिर फट गया। 54 तभी उसने
हथियारों को ढोने वाले को बुलाकर कहा,
'' अपनी तलवार से मुझे मार डालो, ताकि
लोगों को यह कहने का मौका न मिले कि
एक महिला ने अबीमेलेक को मार डाला"
उस जवान ने तब अबीमेलेक के कहने के
अनुसार किया। 55 यह देखते ही इस्राएली
भाग खड़े हुए। 56 इस तरह अबीमेलेक ने
अपने सत्तर भाईयों की हत्या करके जो बुरा
किया था उसके बदले में उसे मौत की सज़ा
दी। 57 शेकेम के आदमियों को भी उनकी
दुष्टता का फल मिल गया। इस तरह गिदोन
के बेटे योताम के कहे शब्दों के अनुसार
हुआ।

10 तोला दोदो का पोता और पूआ का
बेटा था वह शामीर में रहा करता
था। 2 अबीमेलेक के मरने के बाद उसने
इस्राएल पर तेईस साल तक राज्य किया।
3 उसके मरने के बाद याईर ने बाईस साल
तक शासन किया। 4 उसके तीस बेटे गदहियों
के तीस बच्चों की सवारी किया करते थे।
गिलाद देश में उनके तीस नगर भी थे।
5 याईर के मरने के बाद उसे कामोन में

दफ़ना दिया गया। 6 इस्राएली फिर से बाल,
अश्तोरेत और आराम, सीदोन, मोआब,
अम्मोनियों, पलिश्तियों के देवताओं को पूजने
लगे। उन्होंने प्रभु को भुला दिया। 7 तब प्रभु
परमेश्वर को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने
उन लोगों को पलिश्तियों और अम्मोनियों
के वश में कर दिया। 8 उस साल इस्राएली
इन के दबाव में रहे। एमोरियों के गिलाद
में रहने वाले भी इन्हें सताते रहे। 9 अम्मोनी
लोग यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम के घराने
से लड़ने के लिए यर्दन के उस पर जाया
करते थे। 10 तब इस्राएलियों ने यह कबूल
किया कि उन लोगों ने प्रभु को छोड़ बाल
को अपना कर बड़ा भारी गुनाह किया
है। 11 तब प्रभु ने उन से पूछा,"क्या मैंने
तुम्हें मिस्रियों, पलिश्तियों, एमोरियों, और
अम्मोनियों के चंगुल से छुड़ाया न था?
12 जब सिदोनी, अमालेकी और माओनी
लोगों ने तुम्हें तकलीफ दी थी और तुम
मेरे सामने गिड़गिड़ाए, तो मैंने तुम्हें उन से
आज़ाद नहीं किया था ? 13 इसके बावजूद
तुमने मुझे छोड़ दूसरे देवताओं की पूजा करने
लगे। इसलिए अब मैं तुम्हें नहीं छुड़ाऊँगा।
14 अब जाकर उन्हीं से मदद माँगो, वही तुम्हें
बचाएँ।" 15 इस्राएली प्रभु से बोले, "हम ने
गुनाह किया है, इसलिए आपकी जो मर्जी है
कीजिए, लेकिन कम से कम अभी तो बचा
लीजिए।" 16 तब उन्होंने दूसरे देवी-देवताओं
को अपने पास से निकाल दिया। वे लोग फिर
से प्रभु की उपासना करने लगे। इस्राएलियों
के दुख को देख कर प्रभु को दुख हुआ।
17 इसके बाद अम्मोनियों ने गिलाद में और
इस्राएलियों ने मिस्पा में अपने अपने तम्बू
गाड़े। 18 तब गिलाद के गवर्नर लोग एक
दूसरे से कहने लगे, "अम्मोनियों से लड़ने
में जो आदमी पहल करेगा, वही गिलाद के
लोगों का मुखिया होगा।"

11 गिलाद का यिप्ताह बहुत ही कुशल
सैनिक था। वह देह व्यापार करने
वाली का बेटा था। उसके पिता का नाम
गिलाद था। 2 गिलाद की पत्नी के दूसरे बेटों
ने बड़े हो जाने पर यिप्ताह से कहा,"तुम पराई
औरत के बेटे हो, इसलिए हमारी पारिवारिक
सम्पत्ति में तुम्हारा कोई हक न होगा"
3 इसलिए यिप्ताह वहाँ से जाकर तोब में रहने
लगा और यिप्ताह के साथ कुछ लोग हो
लिए। 4 कुछ दिनों के बाद अम्मोनी इस्राएल
से लड़ने लगे। 5 इसी दौरान गिलाद के कुछ
बुज़ुर्ग लोग यिप्ताह को लाने के लिए तोब देश
गए। 6 उन्होंने यिप्ताह से कहा,"अम्मोनियों
के खिलाफ़ हम लोग लड़ेंगे, तुम हमारे
अगुवा बन जाओ।" 7 यिप्ताह बोला,"क्या
तुम भूल गए हो, कि तुमने मुझे मेरे पिता के
घर से निकाल दिया था? और अब मुसीबत
के वक्त मुझ से मदद मांग रहे हो? 8 गिलाद
के बुज़ुर्गों ने यह बात फिर से दोहरायी और
कहा यदि वह उनकी बात मानेगा, तो वे
उसे सभी लोगों के ऊपर प्रधान ठहराएँगे।
9 यिप्ताह ने पूछा,"यदि अम्मोनी हार जाएँ तो
क्या मैं सचमुच तुम्हारा प्रधान बन जाऊँगा?"
10 बुज़ुर्ग लोग बोले,"हाँ जैसा हम कह रहे
हैं, वैसा ही होगा, प्रभु परमेश्वर भी यह
सुन रहे हैं, वैसा ही होगा" 11 तब यिप्ताह
गिलाद के बूढ़े लोगों के साथ गया और उन
लोगों ने उसे अपना प्रधान स्वीकार किया।
12 तब यिप्ताह ने अम्मोनियों के बादशाह के
पास लोग भेज कर यह पूछा,"तुम्हारी मेरे
साथ क्या दुश्मनी है कि मुझे से लड़ने की
योजना बना रहे हो?" 13 अम्मोनियों ने जवाब

में कहा,"मिस्र से लौटते समय इस्राएलियों ने
हमारा काफी बड़ा इलाका हथिया लिया था,
इसलिए वहीं हमें वापस चाहिए।" 14,15 तब
यिप्ताह ने फिर संदेश भेजा कि इस्राएल ने
न मोआबियों की और न अम्मोनियों की
ज़मीन ली। 16,17 लेकिन उन्होंने एदोम के
राजा से उनके देश में से गुज़रने की अनुमति
मांगी, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं मिली। इसी
तरह से मोआब के राजा ने भी किया। इस
वजह से इस्राएल को कादेश में ठहरना पड़
गया। 18 तब इस्राएल घूमते-घूमते दोनों के
बाहर पूरब में अर्नोन के इसी पार आ गया।
19 फिर इस्राएलियों ने एमोरियों को खबर
भेजी कि वे अपने देश से गुज़रने दे। 20 लेकिन
वहाँ के राजा सीहोन को भरोसा न होने
के कारण उसने भी बिनती ठुकरा दी और
लड़ाई लड़ी। 21 इस्राएल इस युद्ध में जीत
गया और एमोरियों के ऊपर अधिकारी हो
गया। 22 अर्नोन से यब्बोक तक और जंगल
से लेकर यरदन तक। 23 इसलिए जब कि प्रभु
ने एमोरियों का खदेड़ दिया है, फिर तुम क्या
उसको पा सकोगे ? 24 क्या कमोश देवता
जो तुम्हें दे, तुम उसे ही नहीं पाओगे ? इसी
तरह जिन लोगों को हमारे प्रभु सामने निकाले
उनके देश के हकदार हम होंगे ? 25 क्या
तुम मोआब के राजा सिप्पोर के बेटे बालाक
से बेहतर हो ? क्या उसने कभी इस्राएल
से पंगा लिया। 26 जब कि इस्राएल हेशबोन
तथा उसके ग्रामीण इलाकों के, अरोएर और
उसके ग्रामों में और अर्नोन के तट के सभी
नगरों में तीन सौ साल से रह रहा है, तो
अब तक तुमने उन्हें आज़ाद क्यों नहीं करा
लिया ? 27 मैंने तुम्हारे खिलाफ़ गुनाह नहीं
किया है। तुम ही मेरे साथ गलत तरीके से
पेश आ रहे हो। इसलिए इन्साफ़ करने वाले
प्रभु इस्राएलियों और अम्मोनियों के बीच
इन्साफ़ करें।" 28 यह सब सुनने के बावजूद
अम्मोनियों के राजा ने यिप्ताह के संदेश को
नकार दिया। 29 तब यिप्ताह में प्रभु का आत्मा
आया। वह गिलाद के मिस्पा से गुज़रता हुआ
अम्मोनियों की ओर चल पड़ा। 30 यिप्ताह ने
एक मन्नत मान ली। वह यह भी कि यदि
उसे अम्मोनियों पर जीत मिल जाए, 31 तो
युद्ध से लौटने पर जो भी उस का स्वागत
करने पहले दरवाज़े पर आएगा उसे वह
बलि करके चढ़ाएगा। 32 युद्ध में यिप्ताह की
जीत हुयी। 33 अरोएर से मिन्नीत तक लगभग
बीस नगर हैं। आबेलकरामीम तक उसने
जीत का झण्डा फहराया और अम्मोनियों
के दाँत खट्टे हो गए। 34 उसके घर वापस
लौटने पर उसकी एकलौती बेटी डफ़ बजाते
हुए उस का स्वागत करने सामने आ गयी।
35 उसको देखते ही वह चिल्ला उठा,"हाय
मेरी बेटी तुमने यह क्या किया ? मुझे दुख
देने वालों में तुम भी शामिल हो गयी हो।
मैंने प्रभु से एक वायदा किया था और उस
से मैं मुकर नहीं सकता।" 36 उसको बेटी
बोली,"पिताजी आप अपनी प्रतिज्ञा को पूरा
कीजिए। प्रभु ने तो आपको अम्मोनियों पर
जीत दिलायी है। 37 फिर उसने अपने पिता से
कहा,"मुझे दो महीनों के लिए छोड़ दीजिए,
ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर
रह कर अपने कुँवारीपन पर शोक मनाऊँ।
38 यिप्ताह ने अपनी बेटी की बिनती को मान
लिया और वैसा ही होने दिया। 39 दो महीनों
के बाद यह लड़की वापस आ गयी और
पिता ने अपनी मन्नत को पूरा किया। इस
लड़की ने कभी भी किसी पुरुष के साथ
शारीरिक सम्बन्ध न रखा था। 40 इसलिए
इस्राएलियों में यह एक प्रथा बन गई, कि हर

साल इस्राएली महिलाएँ यिप्ताह गिलादी की बेटी की बड़ाई करने साल में चार दिन तक जाया करती थीं।

12 एक दिन एप्रैमी सापोन गए और यिप्ताह से पूछा,"जब तुम अम्मोनियों से युद्ध करने गए थे, तब हम को अपने साथ आने को क्यों नहीं कहा ?" अब हम तुम सभी को आग से भस्म कर देंगे। 2 मेरे लोगों का और मेरा, अम्मोनियों से झगड़ा हो गया था, और जब मैंने तुम से मदद मांगी, तब तुमने मुझ से मुँह मोड़ लिया था। 3 लेकिन मैंने हिम्मत नहीं छोड़ी और आगे बढ़ता गया। जिस का नतीजा यह हुआ कि अम्मोनियों को मुँह की खानी पड़ी। और अब तुम मुझ से क्यों लड़ना चाह रहे हो? 4 तब यिप्ताह गिलाद के साथ मिल कर एप्रैम से लड़ा। एप्रैम कहा करता था, "हे गिलगाल तुम एप्रैम और मनश्शे के बीच रहने वाले एप्रैमियों के भगोड़े हो और गिलादियों ने उन्हें खत्म कर लिया। 5 गिलादियों ने एप्रैम के सामने के घाटों को हथिया लिया था, और जब कभी कोई भागा हुआ पार जाने के लिए इजाज़त माँगा करता था, तब गिलाद के लोग उसे से पूछते थे कि क्या वह एप्रैमी है। यदि वह इन्कार करता, 6 तो वे उस से शिब्बोलेत कहने के लिए कहते थे, क्योंकि उसके लिए सही सही बोलना मुश्किल था। इसके बाद वे उसे पकड़ते थे और मार डाला करते थे। इस तरह उन दिनों में बयालीस हज़ार एप्रैमी मौत के घाट उतार दिए गए। 7 सात साल तक यिप्ताह न्याय करता रहा था। उसके मरने के बाद उसे दफ़ना दिया गया। 8 इबसान उसके बाद न्यायी बन गया, जिस ने सात साल तक न्याय किया। 9 उसके तीस पुत्र हुए और तीस बेटियाँ। अपने बेटों का विवाह उसने बाहर की लड़कियों से करा दिया। और इस तरह तीस बहुएँ उसके यहाँ आयीं। 10 उसके मरने के बाद बेतलेहम में उसे मिट्टी दे दी गई। 11 जबूलून का एलोल उसके बाद न्यायी हो गया। दस साल तक उसने राज्य किया। 12 उसकी मौत के बाद उसे अय्यालोन में दफ़नाया गया। 13 उसके बाद हिल्लेल का बेटा पिरातोनी अब्दोन इस्राएल का इन्साफ़ करने लगा। 14 उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए। ये गदहियों के सत्तर बच्चों की सवारी किया करते थे। उसने इस्राएल पर आठ साल तक राज्य किया। 15 तब हिल्लेल का बेटा पिरातोनी अब्दोन मर गया, और उसको ऐप्रैम के देश के पिरातोन में, जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी गयी।

13 फिर से प्रभु के खिलाफ़ काम करने से, उन्हें पलिश्तियों को गुलामी करनी पड़ी। 2 दानियों के कुल में सोरावासी मानोह नामक एक व्यक्ति था, जिस की पत्नी बांझ थी। 3 प्रभु का दूत एक महिला के पास आया और कहा,"तुम गर्भवती हो जाओगी और तुम्हें एक बेटा मिलेगा।" 4 इसलिए तुम सावधानी से जीवन बिताना। दाखमधु, मदिरा से बचना और किसी अशुद्ध चीज़ को मत खाना। 5 तुम्हारे बेटे के बाल मत कटवाना। बचपन से वह नाज़ीर रहेगा। वही इस्राएलियों को पलिश्तियों के चंगुल से मुक्त करेगा। 6 इस महिला ने अपने पति से कहा," प्रभु के संदेशवाहक की तरह एक जन मेरे पास आया। मैंने उस से पूछा कि वह कहाँ का है, लेकिन उसने जवाब नहीं दिया, न ही अपना नाम बतलाया। 7 उसने बताया कि हमारे बेटा होगा जिसे नाज़ीर होना है

और मुझे नशे की चीजों और अशुद्ध चीज़ों से परे रहना है।" 8 तब मानोह ने प्रभु से कहा कि वह व्यक्ति फिर से आए और बतलाए कि होने वाले बच्चे के साथ क्या किया जाए। 9 उसकी बिनती सुनी गई और जब वह अकेली मैदान में बैठी हुयी थी, तभी वह संदेशवाहक उसके पास आया। 10 यह महिला झटपट उठी और अपने पति के पास जाकर सब कुछ बताया। 11 यह सुनते ही मानोह अपनी पत्नी के साथ चला और पहुँचते ही पूछा कि क्या वह वही व्यक्ति था। उसने हाँ में उत्तर दिया। 12 मानोह ने कहा,"तुम्हारी कही हुयी बात पूरी हो लेकिन हमें यह तो बताओ कि इस बच्चे का काम क्या होगा ?" 13 प्रभु के दूत ने कहा,"जिन चीज़ों से अलग रहने को मैंने तुम्हारी पत्नी से कहा है, वह अलग रहे 14 और दी हुयी आज्ञा को वह मानें।" 15 मानोह बोला,"आप थोड़ा रूकें हम आपके लिए स्वादिष्ट खाना बनाते हैं।" 16 प्रभु का दूत मानोह से बोला,"मुझे कुछ भी नहीं खाना है, यदि तुम कुछ कुर्बानी करना चाहते हो तो प्रभु के लिए करो।" 17 मानोह ने प्रभु के दूत से कहा,"अपना नाम बताओ, ताकि इन बातों के पूरे होने पर मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँ। 18 प्रभु का दूत बोला,"मेरा नाम अजीब है।" 19 तब मानोह ने अन्नबलि के साथ बकरी का बच्चा लेकर चट्टान पर प्रभु के लिए चढ़ाया। तभी उस दूत ने एक काम किया। 20 जिस समय आग की लपट उठ रही थी, वह उनके देखते-देखते लपट के साथ गायब हो गया। यह सब देखने पर मानोह और उसकी पत्नी मुँह के बल धरती पर गिर पड़े। 21 इसके बाद ऐसा दर्शन उस दूत ने उन दोनों को कभी नहीं दिया। तभी मानोह को यह भी पता लग गया कि वह प्रभु का दूत था। 22 तब मानोह बोल उठा," हमें ज़रूर अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा क्योंकि प्रभु ने हमें दर्शन दिया है। 23 मानोह की पत्नी बोली,"यदि प्रभु हमें मार ही डालना चाहते, तो हमारी कुर्बानी को न अपनाया होता न ही प्रभु हमें यह सब दिखाते और सुनाते। 24 समय हो जाने पर उनके यहाँ एक बेटा पैदा हुआ उस का नाम उन्होंने शिमशोन रखा। वह बच्चा बढ़ता गया और प्रभु का आशीर्वाद उस पर था। 25 सोरा और एशताओल के बीच में प्रभु का आत्मा उसे उभारता रहा।

14 एक दिन तिम्ना में शिमशोन ने एक पलिश्ती लड़की को देखा। 2 उसे देखने के बाद वह अपने माता-पिता के पास गया और उस लड़की से विवाह करवाने की बिनती की। 3 उसके माता-पिता का जवाब यह था कि क्या उसके अपने लोगों और जान पहचान वाले लोगों में शादी के लायक कोई लड़की नहीं है ? उनके हिसाब से उसे प्रभु के साथ वाचा न बान्धे हुए लोगों के साथ ऐसा रिश्ता नहीं करना चाहिए। उनकी सलाह के बावजूद शिमशोन ने ज़िद्द की, कि उसे वही लड़की पसन्द है। 4 उसके माता-पिता इस बात से अनजान थे कि प्रभु पलिश्तियों को सज़ा देने के लिए मौके का इन्तज़ार कर रहे थे। उन दिनों में पलिश्ती इस्राएलियों पर कब्ज़ा जमाए हुए थे। 5 एक दिन शिमशोन अपने माता-पिता के साथ तिम्ना में एक अंगूर के बगीचे के पास पहुँचा ही था, कि एक जवान शेर गरजते हुए आया। 6 तभी प्रभु का आत्मा उस पर उतरा और उसकी ताकत से उसने उस बकरी के बच्चे को इस तरह फाड़ डाला, जैसे एक बकरी के बच्चे को फाड़ डाला जाता है। 7 लेकिन यह बात उसके माता-पिता के कानों तक नहीं पहुँची। जब

जाकर उसने उस लड़की से बातचीत की,
तो उसे बहुत ही अच्छी लगी। 8 कुछ दिनों के
बीत जाने के बाद वह उसे लाने के लिए लौट
रहा था, तब वह शेर की लाश देखने के लिए
मुड़ गया। उस शेर पंजर में शहर की मक्खियाँ
और शहद था। 9 उस शहद को हाथ में लेकर
वह खाते हुए माता-पिता के पास पहुँचा और
उन्हें भी खाने के लिए दिया। लेकिन उसने
यह नहीं बताया कि वह शहद शेर की सूखी
हड्डियों में बनाए गए मधुमक्खी के छत्ते से
निकाला गया था। 10 फिर उसके पिताजी
लड़की के यहाँ गए जहाँ एक दावत भी थी।
11 उसे देख कर वे उसके साथ रहने के लिए
तीस साथियों को ले आए थे। 12 शिमशोन
ने उन से एक पहेली बूझने की बात कही।
वह बोला,"यदि तुम इन दावतों के सात
दिनों के अन्दर इसका मतलब बता दो, तो
मैं तुम्हें तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े
दूँगा। 13 यदि तुम न बता पाओगे तो तुम्हें
मुझ को तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े
देने होंगे। वे बोले," तुम जरा अपनी पहेली
तो बतलाओ।" 14 उसने कहा,"खाने वाले
में से खाना और ताकतवर में मीठी चीज़
निकली।" लेकिन इस पहेली का मतलब वे
तीन दिन में न बता सके। 15 वे लोग सातवें
दिन शिमशोन की पत्नी से कहने लगे," तुम
अपने पति को फुसला कर पता करो, कि
इस पहेली का अर्थ क्या है, नहीं तो हम
तुम्हारे पिता को परिवार सहित जला डालेंगे।
16 तब शिमशोन की पत्नी रो-रोकर शिमशोन
से कहने लगी,"तुम मुझ से प्यार नहीं करते
हो, बल्कि मेरे दुश्मन हो। इसका सबूत यह
है कि तुमने मेरे लोगों को एक पहेली बतायी
है, लेकिन इसका अर्थ मुझ तक से छुपा
कर रखा है। शिमशोन ने उत्तर दिया,"मैंने
अपने माता-पिता तक को तो बताया नहीं है,
फिर तुम्हें कैसे बता सकता हूँ? 17 दावत के
दिनों में वह महिला रोती ही रही। शिमशोन ने
थक कर सातवें दिन पहेली का अर्थ बतला
ही डाला। उस महिला ने अपने लोगों को
भी बता दिया। 18 सातवें दिन सूरज ढलने
से पहले उस नगर के लोगों ने शिमशोन से
पूछा," शहद से ज़्यादा मीठी वस्तु कौन
सी होती है? और शेर से ज़्यादा ताकतवर
कौन सा प्राणी है?" वह बोला,"यदि तुम मेरी
कलोर को हल में न जोतते तो मेरी पहली
का मतलब कभी नहीं बतला सकते थे।"
19 फिर प्रभु का आत्मा उस पर बड़ी शक्ति के
साथ उतरा। वह अश्कलोन गया और वहाँ
तीस आदमियों को मार डाला। उसने उनकी
दौलत को लूट लिया और तीस जोड़े कपड़े
पहेली बताने वालों को दे दिए। तभी उस का
गुस्सा भी भड़क गया और वह अपने पिता
के घर गया। 20 शिमशोन के जिस साथी ने
उसके साथ दोस्ताना रिश्ता बना कर रखा
था, उस से शिमशोन की पत्नी का विवाह
करा दिया गया।

15 कुछ दिनों के बाद गेहूँ की फ़सल
कटने के वक्त शिमशोन एक बकरी
के बच्चे को अपने साथ लेकर अपने ससुराल
गया। वहाँ उसने अपनी पत्नी के साथ एक
कमरे में समय बिताना चाहा। लेकिन उसके
ससुर ने उसे ऐसा करने से रोका। 2 उस
का ससुर बोला,"मुझे यह मालूम था कि
तुम मेरी बेटी से दुश्मनी रखते हो, इसलिए
मैंने तुम्हारे साथी के साथ उसे ब्याह दिया
है।" 3 तब शिमशोन बोल उठा,"अब यदि
मैं पलिश्तियों का नुकसान भी करूँ, फिर
भी बेगुनाह ठहरूँगा। 4 वह गया और तीन
सौ लोमड़ियों को पकड़ कर लाया। उसने
मशाल लेकर दो दो लोमड़ियों की पूँछ एक

साथ बान्ध दी। उनके बीच में उसने एक-एक
मशाल भी बान्ध दी। 5 इसके बाद उसने
मशालों में आग लगाई और पलिश्तियों के
खेतों में छोड़ दिया। इसलिए पूलों के ढेर
खड़े खेत और जैतून के बगीचे जल गए।
6 तब पलिश्तियों ने पूछा, "यह किस का
काम है? लोगों ने बताया कि यह तिम्नी के
दामाद शिमशोन की करतूत है। वह इसलिए
बौखलाया हुआ है क्योंकि उसके ससुर ने
अपनी बेटी उस से लेकर किसी और को
दे दी है।" इस घटना के बाद पलिश्तियों
ने शिमशोन की पत्नी और उसके ससुर को
आग से जला कर मार डाला। 7 शिमशोन
जाकर उन से बोला,"तुम्हारे इस काम का
में बदला लूँगा। 8 उसने उन्हें एक एक करके
मारा भी और एतान नामम चट्टान की एक
दरार में छिप गया। 9 तब पलिश्तियों ने हमला
किया और यहूदा देश में अपने तम्बू गाड़
दिए। यहाँ तक कि वे लेही' तक फैल गए।
10 तब यहूदियों ने उन से इस किए जाने वाले
हमले की वजह पूछी। जवाब में उन्होंने कहा
कि वे शिमशोन से बदला लेने के लिए ऐसा
कर रहे हैं। 11 इसके बाद तीन हज़ार यहूदी
एताम नामक चट्टान की दरार में जाकर कहने
लगे,"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि पलिश्ती हम
पर हावी हैं, फिर भी तुमने हमारे साथ ऐसा
किया है?" वह बोला,"जैसा उन लोगों ने
मेरे साथ किया था, वैसा ही मैंने उनके साथ
किया है।" 12 वे बोले,"हम यहाँ इसलिए
आए हैं, ताकि तुम्हें बान्ध कर पलिश्तियों के
सुपुर्द कर दें।" शिमशोन उन से बोला, "तुम
प्रण करो कि मुझ पर तुम लोग हमला नहीं
करोगे। 13 वे बोले," हम तुम्हें उनके हाथों
में कर देंगे, लेकिन तुम्हारी जान नहीं लेंगे।
तब उन्होंने उसे दो नई रस्सियों से बान्धा
और उस चट्टान में से ले गए। 14 उसके लही
तक आते ही पलिश्तियों ने उसे ललकारा।
तब परमेश्वर का आत्मा उसके ऊपर उतरा
और जिन रस्सियों से उसे बान्धा गया था, वे
सभी कमज़ोर पड़ गयीं। 15 इसके बाद उसके
हाथ एक गधे के जबड़े की हड्डी लग गयी,
जिस से उसने लगभग एक हज़ार आदमियों
की जान ले ली। 16 तब शिमशोन बोल उठा,"
गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेर के ढेर लग
गए, गदहे के जबड़े की हड्डी ही से मैंने हज़ार
आदमियों को मार डाला। " 17 ऐसा कहने
के बाद उसने वह हड्डी फेंक दी। उस जगह
का नाम रामत-लही रख दिया गया। 18 तेजी
से प्यास लगने पर वह पुकार उठा, "इतना
बड़ा काम होने के बाद अब क्या मैं प्यासा
अपने दुश्मनों के हाथों में पड़ूँगा?" 19 तब
लही में प्रभु ने एक गड्ढा कर दिया, जिस में
से पानी निकलने लगा। उस पानी से शिमशोन
ने अपनी प्यास बुझायी। इसलिए उस सोते
का नाम एनहक्कोरे रखा गया। 20 पलिश्तियों
के दिनों में शिमशोन बीस साल तक शासन
करता रहा।

16 एक दिन शिमशोन गाज़ा गया और
उसने वहाँ एक यौन व्यापार करने
वाली को देखा। 2 गाज़ियों को उसके वहाँ
पहुँचने की खबर मिलते ही, उन्होंने उसे घेर
लिया। वे लोग रात भर नगर के फ़ाटक पर
चुपचाप बैठे रहे। 3 लेकिन शिमशोन बीच
रात में उठा और दोनों पल्लों को पकड़ कर
चौखटों सहित उखाड़ डाला। उन्हें उसने
अपने कन्धों पर उठाया और हेब्रोन के सामने
पहाड़ की चोटी पर ले गया। 4 कुछ समय
बाद वह सोरेक नामक नाले में रहने वाली
दलीला को चाहने लगा। 5 पलिश्तियों के
सरदारों ने उस से कहा कि वह शिमशोन को
फुसला कर उसकी ताकत का राज़ पूछ ले।

यह भी कि उसे किस तरह काबू में किया जा
सकता है। यदि वह हमारा काम कर सकेगी
तो हम में से हर एक उसे ग्यारह-ग्यारह सौ
चाँदी के टुकड़े देगा। 6 एक दिन दलीला ने
शिमशोन से उसकी ताकत का राज़ पूछा।
7 शिमशोन ने कहा,"यदि मुझे न सुखायी गयी
सात तातों से बान्धा जाए तो मेरी ताकत कम
हो जाएगी और मैं एक साधारण इन्सान की
तरह हो जाऊँगा।" 8 तब पलिश्ती सरदारों ने
वैसी ही तांत लेकर दलीला को दी। दलीला
ने उसे उन से बाँध दिया। 9 वहाँ उसके पास
कुछ लोग पहले ही से ताक में बैठे थे। तब
वह बोल उठी," शिमशोन, पलिश्ती तुम्हारे
खून के प्यासे हैं।" शिमशोन ने तांतों को ऐसे
तोड़ डाला, जैसे कि कोई सन की रस्सी
को तोड़ डालता है। इसके बाद भी वे लोग
उसकी ताकत का राज न जान पाए। 10 तब
दलीला शिमशोन मोन से बोली, '' तुमने
मुझे धोखा दिया है, लेकिन अब सच-सच
बता दो कि तुम इतने ताकतवर कैसे हो?"
11 तब उस का जवाब यह था कि कभी
इस्तेमाल न हुयी रस्सियों से उसे बान्धे जाने
पर उसकी शक्ति कम हो जाएगी और वह
दूसरों लोगों की तरह हो जाएगा। 12 तब
दलीला ने नई रस्सियों से उसे बान्धा, लेकिन
इस बार भी उसने धागे की तरह तोड़ डाला।
13 फिर से दलीला की शिकायत यह थी कि
वह उस से दगाबाज़ी कर रहा है। इस बार
शिमशोन ने बतलाया कि यदि उसके सिर की
सातों लटें ताने में बुनी जाएँ, तो उसे बान्धा
जा सकता है। 14 इसलिए उसने शिमशोन
को खूँटी से जकड़ दिया। जैसे ही उसने
पलिश्तियों को सतर्क किया और वह नींद
से चौंक कर जाग गया और सब कुछ खूँटी
सहित उखाड़ डाला। 15 तब दलीला ने कहा,
"तुम झूठ-मूठ कहते हो कि मैं तुम्हें चाहता
हूँ। तुमने तीन बार मुझे धोखा दिया और
सच्चाई नहीं बतायी" 16 आने वाले कई दिनों
तक दलीला ज़िद्द करती रही और उसके
नाक में दम कर डाला। 17 तब एक दिन उसने
सारा भेद खोलते हुए कहा, "मैं बचपन से
प्रभु का नाज़ीर हूँ। मेरे बाल कभी भी काटे
नहीं गए। यदि मेरे बाल काट डाले जाएँ
तो मेरा बल खत्म हो जाएगा।" 18 दलीला
ने पलिश्तियों के सरदारों को बुलवा लिया,
क्योंकि अब उसे गुप्त भेद मालूम हो गया
था। वे लोग अपने साथ पैसा भी लाए थे।
19 एक दिन दलीला ने उसे अपने घुटनों पर
सुला दिया और एक आदमी को बुलवाकर
उस का सिर मुण्डवा दिया और शिमशोन
की ताकत जाती रही। 20 तब वह बोली,
"पलिश्ती तुम्हारी जान के पीछे पड़े है।" वह
अभी तक नहीं जानता था, कि उसके पास
अब वह ताकत नहीं है। 21 तब पलिश्तियों
ने उसकी आँखें फोड़ डालीं। वे उसे अज्जा
ले गए और पीतल की जंजीर से बांध दिया।
जेल में उसे चक्की चलाने का काम भी उन्होंने
उसे दे दिया। 22 इसी बीच उसके सिर में फिर
से बाल आने लगे। 23 पलिश्तियों के सरदार
अपने देवता के लिए जश्न मनाने इसलिए
इकट्ठे हुए क्योंकि उनका विश्वास था कि
दागोन देवता ने उन्हें शिमशोन पर विजय
दिलायी थी। 24 उसे देख कर वे दागोन की
बड़ाई करते हुए कहने लगे कि हमारे दुश्मन
को जिस ने बहुतों को हताहत भी किया
था, हमारे वश में कर दिया। 25 काफी मगन
हो जाने के बाद वे बोले, '' शिमशोन को
हमारे बीच तमाशा करने के लिए बुलवाया
जाए। वहाँ आने के बाद वह खम्भों के बीच
खड़ा होकर तमाशा करने भी लगा। 26 तब
शिमशोन ने उस का हाथ पकड़ने वाले लड़के
से कहा," जिन खम्भों पर यह घर टिका हुआ

है वहाँ मुझे ले चलो, ताकि मैं सहारा ले सकूँ।" 27 वहाँ शिमशोन का तमाशा देखने वाले लगभग तीन हज़ार लोग थे। 28 शिमशोन प्रभु से गिड़गिड़ाया, "प्रभु मुझे ताकत दें, ताकि मैं पलिश्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।" 29 तब उसने उन खम्भों पर ज़ोर लगाया जिन पर इमारत टिकी हुयी थी। 30 वह बोला, "पलिश्तियों के साथ मैं भी अपनी जान दिए देता हूँ।" वह इमारत धड़ाम से गिर पड़ी और उस दिन इतने लोग मर गए, जितने उसने अपने जीवन भर नहीं मारे थे। 31 शिमशोन के भाई और परिवार के दूसरे लोग आए और उठा कर ले गए। उसे सोरा और एशताओल के बीच उसके पिता की कब्र में दफ़नाया गया। इस तरह उसने 2 साल तक इस्राएल का इन्साफ़ किया।

17 एप्रैम के पहाड़ी इलाके में मीका नाम का एक आदमी था। 2 उसने अपनी माँ से कहा, "ग्यारह सौ चाँदी के जो टुकड़े तुम से ले लिए गए थे और जिन के बारे में तुमने शाप दिया था, वे मेरे पास हैं।" उसकी माँ बोली,"मेरे बेटे पर प्रभु की आशीष रहे।" 3 वे चाँदी के टुकड़े उसे मिलने पर उसने कहा,"मेरी कामना यह है कि इस चाँदी से दो मूर्तियों बनायी जाएँ, एक ढाल कर और दूसरी खोद कर। ये मूर्तियाँ तुम्हारे लिए प्रभु को अर्पित की जाएँगी। 4 और ऐसा किया भी गया तथा वे मूर्तियाँ मीका के घर ही पर रहीं। 5 मीका के पास एक देवस्थान था। उसने एक एपोद और तमाम गृहदेवता बनवाए। उसने अपने बेटे का संस्कार किया और उसे पुरोहित करके ठहरा दिया। 6 इस समय इस्राएल में कोई राजा शासन नहीं कर रहा था। इसलिए लोग अपने मन -मर्जी से जी रहे थे। 7 उन दिनों में यहूदा के कुल का एक नवजवान लेवी यहूदा के बेतलेहेम में परदेशी की तरह रह रहा था। 8 वह वहाँ से निकल पड़ा कि कही और ठिकाना पा सके। चलते-चलते वह मीका के घर पर आ पहुँचा। 9 मीका ने उस से पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उसने जवाब में कहा कि वह यहूदा के बेतलेहेम से आया है और एक ठिकाना ढूँढ रहा है। 10 मीका ने कहा,"तुम मेरे साथ रहो और मेरे लिए पिता और पुरोहित बन जाओ। मैं तुम्हें हर साल दस शेकेल रूपे, एक जोड़ा कपड़ा और खाने की चीजें दूँगा। 11 उसने यह बात स्वीकार कर ली 12 तब मीका ने उस जवान का संस्कार किया और वह पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा। 13 मीका की सोच यह थी कि प्रभु का आशीर्वाद उसको इसलिए मिलेगा क्योंकि उसने एक लेवीय को पुरोहित बना कर रखा है।

18 एक समय था जब इस्राएलियों का कोई राजा नहीं था। तभी दान के कबीले के लोग रहने के लिए जगह ढूँढ रहे थे, क्योंकि इस्राएली गोत्रों के बीच उनको उस समय तक उनका हिस्सा न मिला था। 2 तब दानियों में से पाँच ताकतवर आदमियों को जोरह और एशताओल से देश की जासूसी करने और देख-भाल के लिए भेजा। वे लोग वहाँ जाकर मीका के घर के पास ठहर गए। 3 जब वे मीका के घर के पास आए, तब उस जवान लेवीय की आवाज़ पहचानी और मुड़ कर सवाल किया,"यहाँ तुम्हें लाया कौन है, तुम यहाँ करते क्या हो और तुम्हारे पास है क्या?" 4 वह उन से बोला "मीका मेरे साथ नौकर सा बर्ताव कर रहा है, जब कि उसने मुझे अपने यहाँ पुरोहित करके रखा है।" 5 वे बोले,"प्रभु से मालूम करके बताओ कि हमारी यात्रा कामयाब होगी या

नहीं।" 6 पुरोहित ने कहा,"बेधड़क अपनी
यात्रा जारी रखो, प्रभु की आँखें तुम्हें देख रही
है।" 7 तब वे लोग चल दिए। लैश में उन्होंने
देखा कि वे सिदोनियों की तरह बिना किसी
डर के चैन से ज़िन्दगी बिता रहे हैं। वहाँ
के अधिकारी किसी में रोक-टोक नहीं करते
हैं। ये लोग सिदोनियों से दूर रहते है और
दूसरे लोगों से कोई किसी तरह का व्यवहार
नहीं रखते हैं। 8 तब वे सोरा और एशताओल,
अपने भाईयों के पास गए जहाँ उनके भाईयों
ने पूछा,"तुम क्या खबर लाए हो।" 9 वे बोले,
"आओ हम उन लोगों पर हमला बोल दें,
क्योंकि हम ने उस देश को बहुत अच्छा
पाया है।" तुम खामोश क्यों हो? उस देश
पर अपना अधिकार करने में आलस्य मत
दिखाओ। 10 वहाँ पहुँचने पर तुम देखोगे कि
लम्बा-चौड़ा देश है और वह बिना डर के
लोग रह रहे है। उसे प्रभु तुम्हारे लिए अलग
कर चुके हैं। वह ऐसी जगह है, जहाँ किसी
भी चीज की कमी नहीं है। 11 तब सोरा और
एशताओल से दानियों के कुल के छः सौ
लोगों ने हथियारों से लैस होकर चलना शुरू
किया। 12 यहूदा के किर्य्यतयारीम नगर में
उन्होंने तम्बू गाड़ दिए। इसलिए उस जगह
का नाम महनैदान पड़ गया। 13 वहाँ से वे
आगे बढ़े और मीका के घर आए। 14 तब
पाँच वे लोग जो लैश की जासूसी करने
गए थे, अपने भाईयों से कहने लगे,"क्या
तुम्हें मालूम है कि इन घरों में एक एपोद,
तमाम गृहदेवता, एक खुदी हुयी और एक
ढली मूरत है। इसलिए तुम फैसला करो कि
क्या करना है। 15 वे मुड़े और जवान लेवीय
के घर पहुँचे जो मीका का घर था। उन्होंने
उस का हाल चाल पूछा। 16 छः सौ दानी
पुरुष फ़ाटक में हथियार लिए हुए खड़े रहे।
17 पाँच भेदिए वहाँ घुसे और मूरतें, एपोद
और गृहदेवताओं को ले लिया। वह पुरोहित
फ़ाटक में हथियार बान्धे छः सौ लोगों के
साथ खड़ा था। 18 जैसे ही पाँच आदमी मीका
के घर में से यह चीजें ले आए, पुरोहित ने
सवाल किया,"तुम यह सब क्या कर रहे
हो।" 19 वे बोले,"खामोश। हमारे साथ तुम
चलो और हमारे लिए पिता और पुरोहित बन
जाओ। तुम्हारे लिए भला क्या है? यह कि
एक ही आदमी के घराने का पुरोहित हो या
यह कि इस्राएलियों के एक गोत्र और कुल के
पुरोहित हो जाओ। 20 यह सुन कर पुरोहित
खुश हुआ। इसलिए वह एपोद, गृहदेवता
और खुदी हुई मूरत की लेकर उनके साथ
चला गया। 21 मुड़ कर उन्होंने बाल-बच्चों,
जानवरों और सामान को अपने आगे किया
और चल पड़े। 22 जब वे मीका के घर कुछ
दूरी तक पहुँचे थे, तभी मीका के घर के
निकट रहने वालों ने मिल कर दानियों को
धर दबोचा। 23 और दानियों को पुकारा, तब
उन्होंने मुँह फेर कर मीका से कहा,'तुम्हें हो
क्या गया है कि इतने ढेर से लोगों को साथ
लेकर आए हो? 24 वह बोला, "तुम तो मेरे
बनवाए हुए देवताओं और पुरोहित को ले
आए हो, फिर मेरे पास रहा ही क्या है? फिर
ऐसा प्रश्न क्यों कर रहे हो?" 25 दानियों ने
उस से कहा, "हम लोगों के बीच तुम्हारी
आवाज़ सुनने तक न आए। कहीं ऐसा न हो
कि गुस्सैल व्यक्ति तुम पर हमला कर दे और
तुम व तुम्हारे घर के लोगों की जान चली
जाए। 26 तब दानी लोग चल दिए। मीका
यह देख कर कि वे मुझ से ज़्यादा ताकतवर
हैं, वापस लौट आया। 27 और वे मीका की
बनायी हुई चीजों और उसके पुरोहित को
साथ लेकर लैश पास आए। वहाँ के लोग
शान्ति से और बिना डर के रहा करते थे।
उन्होंने उनको तलवार से मौत के घाट उतार

दिया, और नगर को आग से जला डाला।
28 वहाँ कोई बचाने वाला न था, क्योंकि वह
सीदोन से दूर था। 29 उस नगर का नाम दान
रख दिया जब कि पहले उस का नाम लैश
था। 30 दानियों ने उस खुदी हुई मूर्ति को खड़ा
किया। देश की गुलामी योनातान और उसके
वंश के लोग दान गोत्र के पुरोहित बने रहे।
31 प्रभु का भवन जब तक शीलो में बना रहा,
तब तक मीका की मूरत बनी रही।

19 वह समय था जब इस्राएलियों के
पास कोई राजा नहीं था। उसी वक्त
एक लेवीय एप्रैम के पहाड़ी देश की दूसरी
ओर एक परदेश की तरह रहा करता था।
उसके पास एक सुरैतिन थी। 2 यह महिला
व्यभिचार के बाद अपने पिता के यहाँ गयी
और चार महीने वहीं थी। 3 तब उस का
पति अपने दो नौकरों और दो गदहे लेकर
उसके यहाँ चल दिया। वह उसे समझा कर
वापस लाना चाहता था। उस महिला ने उन्हें
अपने पिता से मिलवाया। ईनाम देख कर तो
महिला का पिता बहुत खुश हो गया था।
4 उसने उन सभी को तीन दिन तक रोके
रखा। 5 चौथे दिन बड़े सवेरे वे उस जगह को
छोड़ने वाले थे। तब महिला का पिता अपने
दामाद से बोला, “थोड़ा खा पी लो, फिर
जाना। 6 महिला के पिता ने एक दिन और
उसे टिक जाने के लिए बिनती की। 7 उसने
जाने का मन बना लिया था, लेकिन दबाव
में आकर एक रात और टिक गया। 8 पाँचवे
दिन सवेरे जब वह चलने की तैयारी में था,
महिला के पिता ने शाम ढलने तक फिर
रूक जाने को कहा। फिर उन लोगों ने खाना
खाया। 9 जब वह व्यक्ति अपनी सुरैतिन तथा
नौकरों के साथ फिर निकलने पर था तब
महिला के पति ने कहा कि दिन ढल रहा है,
इसलिए रात यहीं बिताओ। 10 लेकिन उस
रात यह पुरुष रूका नहीं और अपने नौकरों
तथा सुरैतिन को लिए हुए चल दिया और
यरूशलेम पहुँचा। 11 जब वे यरूशलेम के
पास ही थे, नौकर बोले, “रात हो रही है
हम यहीं ठहर जाते हैं।” 12 मालिक ने जवाब
दिया, “पराए नगर जहाँ कोई इस्राएली नहीं
रहता है, हम नहीं ठहरेंगे, लेकिन गिबा तक
चलते जाएँगे।” 13 फिर उसने सेवक से कहा,
“चलो हम गिबा या रामा में रात गुजारें।”
14 गिबा के पास पहुँचते-पहुँचते सूरज डूब
गया था। इसलिए वे वही भीतर चौक में बैठ
गए। किसी ने भी उन्हें अपने घर में नहीं
रखा। 15 गिबा के निवासी बिन्यामीनी थे।
जब वे गिबा के पास पहुँचे, सूरज डूब चुका
था।उन लोगों ने रात वहीं गुज़ारनी चाही।
जब वह शहर में गया, तो सड़क पर ही
बैठा रहा, क्योंकि कसी ने उसे घर में न
टिकाया। 16 वहीं एक बुज़ुर्ग परदेशी खेत पर
काम करके वापस जा रहा था। 17 इन लोगों
को चौक में बैठा देख कर उसने पूछ-ताछ
की। 18 उसने उस से कहा, “हम बेतलेहेम से
आए हैं और पहाड़ी देश के दूसरी ओर जा
रहे हैं। वहीं का मैं हूँ भी और प्रभु के भवन
को जा रहा हूँ। यहाँ तो कोई भी अपने घर में
टिकाने को राज़ी नहीं हैं। 19 हमारे पास खाने
के लिए है और गदहों के लिए पुआल भी।
हमें किसी से कुछ नहीं चाहिए। 20 वह बुज़ुर्ग
बोला, “तुम्हारा कल्याण हो। तुम रात चौक
में नहीं बिताओगे, मेरे संग रहोगे।” 21 तब वे
सभी उसके घर गए। हाथ पैर धोने के बाद
खा पी रहे थे और गदही को उसने चारा भी दे
दिया था। 22 तभी वहाँ के पुरुषगामियों ने घर
को घेर लिया और कहा, “अपने मेंहमान को
बाहर करो हम भी उसके साथ यौन सम्बन्ध
करेंगे।” 23 बुज़ुर्ग आदमी ने कहा, “कृपया

मेरे मेंहमान के साथ ऐसा गंदा काम मत
करो।" 24 मेरे पास एक कुँवारी बेटी है और
उस व्यक्ति की सुरैतिन भी है। उन दोनों को
मैं बाहर ले आता हूँ। उनके साथ जो तुम
चाहो करो, लेकिन इस आदमी के साथ ऐसा
गलत काम मत करो। 25 जब लोग मानने के
लिए राजी न हुए तो सुरैतिन को पकड़ कर
बाहर लाया गया। रात भर लोग उसके साथ
बुरा व्यवहार करते रहे और सुबह बाहर कर
दिया। 26 यह महिला उस व्यक्ति के घर के
दरवाज़े पर जाकर पड़ी रही जहाँ उस का
पति था। रोशनी होने तक वह वहीं पड़ी रही।
27 सुबह जब उस का पति घर से बाहर आया
तो अपनी सुरैतिन को हाथ फैलाए पड़े देखा।
28 वह बोला, "चलो अब चलते हैं।" लेकिन
महिला की आवाज़ न निकली। तब उस पुरुष
ने सुरैतिन को गधे पर लादा और अपने घर
के लिए चल पड़ा। 29 घर पहुँचने पर उसने
उस लाश के बारह टुकड़े करके इस्राएल देश
में भेज दिए। 30 यह सब देख कर लोगों ने
आपस में कहा, "मिस्र की गुलामी से निकल
कर आने के बाद आज तक ऐसा कभी नहीं
हुआ और न ही ऐसा देखा गया। इस विषय
पर सोच विचार करना चाहिए।

20 तब दान से लेकर बेर्शेबा तक के
सभी इस्राएली और गिलाद के लोग
मिस्पा में प्रभु के सामने इकट्ठे हुए। 2 इस
में प्रजा के मुखिया तथा चार लाख तलवार
चलाने वाले सिपाही थे। 3 बिन्यामीनियों को
मालूम पड़ा कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे
हुए हैं। इस्राएलियों ने उस पुरुष से पूछ-ताछ
शुरू की। 4 लेवीय पति ने बताया,"मैं अपनी
सुरैतिन के साथ गिबा में ठहरने गया था।
5 गिबा के आदमियों ने हम पर हमला बोल
दिया। वे मुझे मार डालना चाहते थे। मेरी
सुरैतिन के साथ उन्होंने इतना बलात्कार
किया, कि उसकी जान ही चली गई। 6 तब
मैंने उसकी लाश के बारह टुकड़े भेज कर
और इस्राएल में इस बुरे काम का ऐलान
कर दिया। इस्राएलियों ने तो सचमुच यह
दुष्ट काम किया था। 7 हे इस्राएलियो, सुनो
और देखो और अपनी सलाह दो। 8 तब सब
ने एक मन होकर कहा,"हम में से कोई
भी अपने घर नहीं जाएगा। 9 अब हम चिट्ठी
उठाएँगे और गिबा पर हमले की तैयारी शुरू
करेंगे। 10 सब इस्राएली गोत्रों में से दस,
और दस हज़ार में से एक हज़ार आदमियों
को अलग किया जाएगा। वे लोग फ़ौज को
खाना पहुँचाएँगे। और हम लोग गिबा से
बदला लेंगे।" 11 इस तरह से सभी एक मन
होकर इकट्ठे हो गए। 12 इस्राएली गोत्रियों ने
बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में कुछ को पूछने
भेजा कि उन्होंने यह कैसा काम कर डाला।
13 यह भी कि उन कुकर्मियों को सज़ा के लिए
हमें दो, ताकि इस्राएल से बुराई को निकाला
जाए।। लेकिन बिन्यामीनियों ने इस्राएलियों
को इस बिनती को सुनने से इन्कार कर
दिया। इसके विपरीत वे इस्राएलियों से लड़ने
के लिए तैयार हो गए। 14 इस्राएलियों से
लड़ने बिन्यामीनी गिबा में इकट्ठे हुए। 15 उस
दिन गिबावासी सात सौ लोगों के अलावा
तलवार चलाने में माहिर दूसरे नगरों से आए
बिन्यामीनी कुल मिला कर छब्बीस हज़ार
लोग थे। 16 सात सौ बैहत्थे, गोफ़न चलाने
में माहिर थे। 17 बिन्यामीनियों के अलावा
इस्राएली पुरुष ऐसे थे जो तलवार चलाने में
तेज थे। 18 बेतेल जाकर इस्राएलियों ने प्रभु
से सलाह मांगी कि बिन्यामीनियों पर कौन
हमला करे। प्रभु ने बतलाया कि यहूदा पहल
करे। 19 सुबह के समय इस्राएलियों ने गिबा
के सामने तम्बू गाड़ दिए। 20 मुकाबले के

लिए दोनों ही आमने सामने आ गए। 21 तब
बिन्यामीनियों ने बाईस हज़ार इस्राएलियों
को मौत के घाट उतार डाला। 22 लेकिन
इस्राएलियों ने हिम्मत नहीं हारी। 23 वे प्रभु के
सामने गिड़गिड़ाते रहे। फिर से प्रभु ने उन्हें
लड़ने के लिए अगुवाई की। 24 दूसरे दिन
इस्राएली फिर से बिन्यामीनियों का मुकाबला
करने पहुँचे। 25 उस दिन भी अठारह हज़ार
इस्राएली हताहत हुए। 26 इस्राएली बेतेल
गए। उपवास किया और रोते रहे। वहीं
उन्होंने होमबलि और मेलबलि की। 27 वाचा
का बक्सा, तब वहीं था और फिर प्रभु
से सलाह मांगी गई। 28 पीनहास जो हारून
का पोता और एलीआजार का बेटा था,
उन दिनों बक्से के सामने उपस्थित रहा
करता थे। पूछने पर प्रभु ने बिन्यामीनियों
से लड़ते की इजाज़त दी। उन्हें जीत का
आश्वासन भी दिया गया। 29 इसके बाद
इस्राएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों को
बैठा दिया 30 तीसरे दिन फिर घमासान हुआ।
31 इस समय केवल तीस इस्राएली मारे।
32 बिन्यामीनी कहने लगे, “पहले की तरह वे
लोग मारे जा रहे हैं।” लेकिन इस्राएली बोले,
“हम उन्हें खींच कर सड़क पर लाएँगे।”
33 तब सभी इस्राएली पुरुषों ने बालतामार
में पांति बान्धी। तभी छुपे हुए इस्राएली
अपने मारे-गेबा से अचानक निकल आए।
34 तब दस हज़ार इस्राएली सामने आए और
घमासान युद्ध छिड़ गया। 35 तब प्रभु ने
बिन्यामीनियों को इस्राएल से हरवा दिया।
उस दिन पच्चीस हज़ार एक सौ बिन्यामीनी
मारे गए। 36 बिन्यामीनियों के हारने के बाद
गिबा के पास बैठाए गए घातक भी चले
गए। 37 इन घातकों ने गिबा पर झपट्टा मारा
और आगे बढ़ कर पूरे नगर के लोगों को
मारा। 38 इस्राएली लोगों और घातकों ने जिस
निशान को ठहराया था वह तो धुएँ का
खम्भा था। 39 इस्राएली पीछे हटने लगे, तो
बिन्यामीनियों ने यह कह कर कि ज़रूर वे
पहली लड़ाई की तरह हम से हार रहे हैं,
इस्राएलियों को मारने लगे। इस तरह तीन
आदमी वहाँ मारे गए। 40 बिन्यामीनियों ने
जब पीछे मुड़ कर देखा तो आकाश में धुआँ
उठ रहा था। 41 तभी इस्राएली पीछे घूमें,
जिन्हें देखते ही बिन्यामीनी किसी मुसीबत
से डर कर घबरा गए। 42 इसलिए उन्होंने
इस्राएलियों को पीठ दिखाई और जंगल के
रास्ते को अपना लिया। इसी बीच लड़ाई
जारी रही और जो दूसरे नगरों से आए थे,
उनको इस्राएली रास्ते ही में मारते गए।
43 उन्होंने बिन्यामीनियों को घेर लिया और
उन्हें खदेड़ा। वे मनूहा में गिबा के पूरब की
ओर तक उन्हें लताड़ते रहे। 44 अठारह हज़ार
ताकतवर बिन्यामीनी मारे गए। 45 तब वे घूम
कर जंगल में रिम्मोन चट्टान की तरफ़ भाग
गए। लेकिन इस्राएलियों ने उन्हें सड़कों पर
चुन-चुन कर मारा। गिदोम तक पीछा करते
हुए उन्होंने दो हज़ार लोगों को मार डाला।
46 उस दिन पच्चीस हज़ार तलवार चलाने
वाले मारे गए। 47 छैः सौ लोग घूमें और जंगल
की ओर दौड़े। वे रिम्मोन नाम चट्टान पहुँचे।
वे लोग चार महीने तक वहीं रहे। 48 फिर से
इस्राएली लौटे और बिन्यामीनियों पर लपटे।
उन्होंने इन्सानों और जानवरों दोनों ही को न
छोड़ा। सारे नगरों को उन्होंने आग से जला
डाला।

21 इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा ने
यह कसम खायी थी, ‘‘ हम
बिन्यामीनियों के साथ शादी से सम्बन्धित
कोई व्यवहार न रखेंगे। 2 बेतेल जाकर वे
लोग फूट-फूटकर रोते रहे। 3 वे कह रहे

थे, “हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर, एक
गोत्र हमारा कम हो गया है। आखिर ऐसा
हुआ क्यों।” 4 दूसरे दिन उन्होंने वेदी बना
कर होमबलि और मेलबलि चढ़ायी। 5 तब
इस्राएलियों ने सवाल किया, “कौन सा गोत्र
सभा में उपस्थित न था?” उन्होंने तो पक्का
प्रण किया था कि जो कोई मिस्पा में प्रभु के
पास नहीं आएगा, वह मार डाला जाएगा।
6 तब इस्राएलियों को पछतावा हुआ कि
उन्होंने एक गोत्र खो दिया है। 7 वे बोले, हम
ने शपथ तो खा ली है कि हम उनके साथ
वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे लेकिन हमारे
लड़कों को लड़कियों की ज़रूरत है। 8 जब
उन्होंने पूछा कि इस्राएल के गोत्रों में से कौन
है जो मिस्पा[a] में नहीं गया। तब मालूम पड़ा
कि गिलादी याबेश से कोई भी नहीं आया
था। 9 गिनती करने पर यह बात सच भी
निकली। 10 इसलिये यह तय किया गया कि
गिलादी याबेश के सभी लोगों को बर्बाद
किया जाए, 11 और सभी पुरुषों को और
उन महिलाओं को जिन्होंने पुरुष का मुँह
देखा हो, उन्हें मार दिया जाए। 12 वहाँ उन्हें
चार सौ जवान कुमारियाँ मिलीं, जिन्होंने
पुरुष का मुँह नहीं देखा था। इन लड़कियों
को वे कनान देश के शीलो में ले आए।
13 तब पूरी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के
पास जो रिम्मोन चट्टान पर थे, संदेश भेजा
ताकि मेल किया जा सके। 14 उसी समय
बिन्यामीनी लौट गए। उन्हें वे स्त्रियाँ दी
गयीं जो गिलादी याबेश की स्त्रियों में से
छोड़ी गई थीं, लेकिन उनकी संख्या फिर
भी कम ही थी। 15 तब उन्हें दुख हो रहा
था, कि एक गोत्र उन्होंने खो दिया। 16 तब
बुज़ुर्ग लोग बोले, “जिन पुरुषों की पत्नियाँ
नहीं रहीं, उन पुरुषों के लिए क्या इन्तज़ाम
होना चाहिए?” 17 फिर वे बोले, “बचे हुए
बिन्यामीनियों के लिए हिस्सा ज़रूरी है,
ताकि इस्राएल का एक गोत्र खो न जाए।
18 लेकिन हम अपनी कोई बेटी ब्याह में न
दे सकेंगे क्योंकि इस्राएली इस बात की
कसम खा चुके हैं कि वह व्यक्ति सज़ा पाए,
जो किसी बिन्यामीनी से अपनी लड़की की
शादी करवाए।” 19 फिर वे बोले, “शीलो
में हर साल प्रभु के लिए त्यौहार मनाया
जाता है। 20 इसलिए बिन्यामीनी लोगों को
वहाँ जाकर अंगूर के बगीचे में बैठ कर
घात लगाना चाहिए। 21 वहाँ बैठ कर देखते
रहो। जैसे ही शीलोह की लड़कियाँ नाचने
आएँ, तुम अपने लेकर वापस अपने देश
चले जाना। 22 जब उनके पिता या भाई हम
से झगड़ा करने आएँगे, तब हम उन से
कहेंगे, कि वे हम पर कृपा करें और महिला
दें, क्योंकि युद्ध के समय हम ने उन में से
प्रत्येक के लिए एक महिला नहीं बचाई
थी। उस समय तुमने उनका विवाह नहीं
किया, नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते। 23 यह
सुन कर बिन्यामीनियों ने वैसा ही किया।
उन्होंने अपनी गिनती के मुताबिक नाचने
वालियों में से अपने लिए पत्नियाँ कर ली।
बाद में वापस अपने बसने की जगह आ
गए। 24 उसी वक्त इस्राएली वहाँ से अपने
गोत्र और परिवार में आ गए। 25 इस समय
इस्राएल में कोई राजा राज्य नहीं कर रहा
था। लोग अपनी मनमानी कर रहे थे।

[a] **21.8** प्रभु के लिए आराधना के स्थान

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com